

[illegible]

त्रिषय प्रथमया शक्ति शक्तो स
मुदा पाणिमदवा स्वगय ॥
धतयुक्त्या ॥ ॥ कसक
कसुमात्रेका निमरुतयाय
॥ ॥

साक कसुवेन कया विवि
निशाममवतत्रभा उक्त्या
कय कनिवाता यितवकु
ननियकंते ॥ यरुया
मयावदकया न मात्रकोवा
य ॥ अत्रिकुल यका अरु
कलमगाहा लयाननय ॥
मकलदममकु नरंदसूय
वति ॥ अउजा ॥ अग्रामको
मात्रावा ॥ सउठा कसुनका
पागका सयाजा नलकु
नव अजनसाना वलंगतद
नदमिग यनिम मकलद
ममकुसर्ग ॥ अय खानसा
उठा सदका सांन ॥ सुया
दिवामात्रका गय ॥ कस
कनसिंदरमय वरुम
लवाय ॥ अतवाया ॥

अथयावदकया यथी
दिन अत्रिकुल यादनि

वसा ॥ ॥ वाका ॥ वधुगरी
यनिशुदक वद्विशाद थ
मवाकनमजी नथीद यवा
दकयाय ॥ अमयवादक

अथय प्रथमेन कया उिका
मयाय ॥ यथय यथवि
विमकु वकलम अत्रिया
या ॥ उवकल यजाय
निमकय अरु कलमयग
नययादि म अयसगल
स्यनिवात्रया उदमासन
मम ॥ पृथीनम ॥ खानकु
गन्त ॥ उतगाहा नय
नी ॥ उगला यामीयादि
उवकल यजाय निमकल
उदमासन नमयथी ॥
आत ॥ यीनी यीन वरुवा
वका वरुवा लन हं सया
नचविशाली दलाकस कम
उर्न ॥ यका अमपृथी ॥
॥ वेदा ॥ उवकय हानय
अमयप्रकादिसीमन ॥ सूत्रवा
वनयाव ॥ सवका उयमा अरु
सुयिवा ॥ सग अजा निमसग
वतिव ॥ ॥ उवकल यजाय
ममयज कासु कासावा म

गनयश्च जेन्तविश्वक रुद्रश्च
 दयनिदवा वृहदमविद
 (थसूतीनाऽयं माविश्ववि
 श्वकमायाऽपि नानयन
 स्याददि ॥ ॥ ॥ पुजायन
 लदगान्ध्या विश्वपुयादिः
 यत्रिगायतयत्कामास्त
 हनस्तन्नायुस्तयऽस्यामय
 गथात्रयी ॥ ॥ ॥ यदक
 लऽयं दमासनेनमऽप
 र्दऽ॥ वदऽ॥ धनऽ॥ ॥ ॥ ॥
 यनमनऽगयं जगधियऽति
 साविप्रस्यवृहताविद्यश्चिन
 ४ विहगादाधवयूनाविद
 कयनेमयीदवस्य सविह
 यत्रिहृति ॥ ॥ ॥ धनऽ॥ यऽ॥ ॥
 वृदं विहृति वृहमयं यनि
 दधयदं समूहमस्यायाऽस
 तऽ॥ ॥ ॥ सामायऽ॥ ॥ ॥ ॥
 रात
 गीधनमेगीहिरुतऽसूयव
 सिनीमनवदऽस्यायास्तऽ
 रात्रादसीविहृतिदधयऽ
 पृथिवीमलिगामयुखऽस्या
 हऽ॥ ॥ ॥ अऽ॥ ॥ ॥ ॥ दतऽ
 तोदवस्यायावगियावीयन
 मधर्जकल्ययनिहृदयस्त
 यनमाजिह्वनऽ॥ ॥ ॥ ॥

मावदगंदवा द्रुयऽआयुमा
 निहृदिहृयुजामा निहृदि
 हृमयनमयावर्षयधिया
 ४॥ ॥ अनितऽ॥ ॥ ॥ ॥
 धूऽलुकेवायालियवार्च
 यऽयाधिहानि विममत्रा
 ४ सिऽयाजस्तु रायद्रुत
 ४ सधस्तु विहृकमानस्तु
 (धनऽ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 अनऽसायऽ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 उगतापृथिव्यामहावावि
 सुउत्राप्रकप्रिहऽ॥ ॥ ॥ ॥
 हस्तऽवसूनापृदस्ययस्तु
 दकिहृदागसयाविहृति
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 युगवतऽ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 मऽ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 प्रषण्विहृतिमल्लविहृति
 यनिहृतिनानिति ॥ ॥ ॥ ॥
 यनसायऽ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 माविहृतिहृयुजामाविहृति
 तसिहृतिहृयुजामाविहृति
 विहृतिहृयुजामाविहृति
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

मासननमः॥ यथा॥ १॥ वद॥

ॐ माकषुननरुसखादि१०

॥ ॐ वन्द्यादिदशलाक

यालस्य॥ वन्दमासननमः॥

यथा॥ १॥ वद॥ ॐ गाना

मिन्दुगि१०॥ ॐ यथा

कयालस्य॥ वन्दमासननमः॥

यथा॥ १॥ वद॥ ॐ गाना

नान्ति॥ ॐ यथा

दागिदाय॥ वन्दमासननमः॥

१॥ वद॥ ॐ मयाजानि॥ ॥

नमासुधाय॥ ॐ यथा

मादित्या॥ वन्दमासननमः॥

यथा॥ १॥ वद॥ ॐ वाक्कलास

विगत्र॥ ॐ दधिकाप्रा

॥ ॐ दीर्घाय॥ स्वाना॥ ॐ

या॥ रुतिनी॥ दूमित्र॥ ॐ

रुत॥ १॥ स्व॥ सुयजा॥ यजा॥

सि॥ १॥ सु॥ सुवीत्रा॥ वीत्र॥ सुय

ष॥ यथा॥ वर॥ गान॥ ॐ यथा

सुवानिष॥ नय॥ वावस

मिकगा॥ गाना॥ वन्दमासननमः॥

थ॥ यथा॥ नय॥ यथा॥ १॥ वद॥

सि॥ ॐ वन्द्यादि॥ कयाल

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

नमा॥ ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

सि॥ ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

ॐ यथा॥ १॥ वद॥ ॐ यथा

जायकाग॥ॐ यप्रथा निच
कुमुदिमूक्तिस्सुनिनिवासिग
ष्टिदिकमैसका निर्यतस्म
वक्रनमास्तुग॥ नत्तामेधी
विद्युष्टराया॥ निर्यानन्द
नमस्तु कविप्रदयी॥ अष्ट
स्वभावसिवाप्त॥ कीमाप्री
मयूरा॥ ॐ हृदयनमस्तु ह्य
॥ अगुगन्धेदि॥ ॐ निजस्त
गमयनविधि॥

अर्थयदासाधनकल्या ॥
वयसाधनवदविधानेन ॥
भयानाम॥ ॐ मन्त्रगात्र
थस्वाहा॥ ॥ यगाद्रुगिमा
लकास्तु विय॥ यगाद्रुगि
॥ ॥ गिलाद्रुगिस्तु कल
स्तु विय॥ वक्राग्रकल
सष्टुगसमिधसह्युगिष्टा
॥ गिलाद्रुगिपूर्णा॥

गतायथाकमेकाग्रय ॥
वधूयामवक्रननियर्क
स्तु नगदका ननियर्क ॥ ग
यिष्टकावठनया यर्क

हय॥ ॥ यवक्रिवायाव
कातात्रसलंस्वतस्मि ॥ ॥
याद्वनतधुस्तु क्रिवाग ॥
॥ ॥ यन्मन्त्रनिर्मनिर्म
नःशमसा॥ ॐ नक्रादृष्टं
वसि॥ ॐ अष्टवायति॥ वि
स्वातस्वसुतातकतस्वाया
॥ ॥ वधूयन्मन्त्रनहा
या॥ ॐ स्वस्तिनं ॐ न्द्रा॥
अष्टकलगात्रस्त्रानया चक
वधूयन्मन्त्रनयादकिर्ण
य॥ ॐ नाननधनक ॥ ॐ य
॥ ॥ यगाद्रुगिस्तु कल
मन्त्रा॥ ॥ नडयूजायाय
॥ नायितमन्त्रे ॐ दमास
नादि॥ लाहागसस्वस्तिक
वायचगन॥ ॥ चन्द्रम
लकलगादकिर्णसह्यु
या॥ ॥ लुसिधनक ॥ वधू
मन्त्रस्वतनमागुह्यकयन्
यन्त्रा॥ ॥ मूय्यावयाचक
वधू॥ ॥ इह अक्रगलस्वस्वा
नस्तु कगा मन्त्रसगसुंका
नकन ॥ यन्त्रकलगायन्त्र
ॐ अष्टवालाह ॥ ॐ अ

आदि॥ वधुसुधामगलधन
 सूर्यवक्त्रनिमित्तार्थः
 दमर्द्यगृहागसाहा॥ जा
 कास॥ ॐ आदित्यं गरुडय
 सासमन्त्रिसहस्रस्यपुनिः
 मासिष्ठत्रयं॥ यत्रिवृत्तिरु
 त्सामाहिमेशका॥ ४॥ गाय
 र्थकृद्गृहित्रीयमानं॥ गृहि
 सूर्यसहस्रं॥ गङ्गाका
 सितागल्यं गङ्गाकन्याय
 ल्मरकागृहालमर्द्यद्विवा
 कन॥ ४॥ आयुर्वृद्धियसावृ
 द्धिर्वृद्धियसासखप्रिय॥ ४॥
 म्मसन्तानवृद्धिस्थसन्तानस
 कवृद्धय॥ ॥ गङ्गावतमस्तु
 री॥ त्रकचन्दनत्रकयज्ञा
 यवीराष्यत्रकंधूयदीय
 ॥ नैवद्वय॥ ॥ गङ्गा॥ यला
 गवक्त्ररूपायमध्याद्रुद्र
 रूपीणी॥ अयत्राद्रुद्ररूपः
 पायसूर्यदेवनमास्तु
 ॥ वधुकर्मात्रं॥ गङ्गावत
 न्मृद्विषकविययत्रवज
 ॐ दवस्तुत्वा॥ चन्दनसिद्ध
 न्मृगागीवादी॥ ॐ श्रीगङ्गा
 धर्मप्रदा॥ लवामर्द्यका

या॥ ॥ अर्घ्यविद्यालुडिवा
 यकलकाय॥ ॥ वधुला
 सासयन्त्रं॥ कात्रिनिर्नर्
 खकातधर्मा॥ अग्निक्लृप्त
 वनयकीयन्त॥ ॥

यद्गङ्गासिंहासनआयविनर
 स्थितिकसस्तन॥ ॥ कृष्ण
 नथियकन्त॥ ॥ अर्घ्यय
 लंयनराय॥ ॥ गिगल्वन
 लाय॥ ॐ दूर॥ स्वाहा॥ ॐ यज्ञ
 यज्ञान्॥ ॐ दूर॥ स्वाहा॥ ॥
 ॐ दूर॥ विष्णु॥ ॐ दूर॥ स्वा
 हा॥ ॐ नमः॥ गङ्गाय॥ ॥
 ॥ गङ्गावतमस्तु॥ कृष्ण
 नथियावग॥ ॐ अग्निमर्गनि
 रिमूर्ग॥ ॐ यवाएग॥ सवि
 तामिददा॥ ॐ दूर॥ कल्ययणी
 मित्रताम॥ ॥ ललात्रयाजि
 स॥ ॐ जन्मगङ्गावतमस्तु
 आग॥ ॥ नाहि॥ गङ्गावती॥ ॐ गङ्गा
 न्दहि॥ जिनीता॥ ती गङ्गावती
 गृध्रपुत्रा॥ गङ्गावती॥ अग्नि
 दतावावलायकृत्तमुजी
 ॥ ॥ कनक॥ ॐ दूर॥

ॐ नमः॥ गङ्गावती॥ अग्नि
 दहियमा॥ ॥ १

यजायगिअरुफलजगदाय
 त्यादिउदमासननमः॥ अर्घ्य
 १॥ अर्घ्यचक्रनसिन्दूरयज्ञ
 यदीनयुष्यधूयदीय॥ ॥
 स्नाय॥ उंयप्रथानीत्यादि॥
 ॥ मण्डलसञ्चरिगस्तानेकय
 ॥ ॥ महारुगाउवासुगुटी
 लाय॥ ॥ मकलदममण्ड
 लतीविययडिगविय॥ ॥
 उंयथापविणममि॥ ॥ सीया
 ऊर्जगत्यारुपुननवहाय॥ ॥
 सीयायविधिर्थ॥ ससावाथय
 ॥ उंयस्तिनामना॥ ॥ वृसदा
 नानसंयय॥ उंदीयायुहा॥
 ॥ ॥ उवखवत्यासंजीथिद्विय
 ॥ दारुलखानेअरुगगस्यद
 थसद्याचसाकयाय॥ उंयव
 गरीकाननिमित्तयर्थकसेतन
 नसुमरुमरु॥ उंययणीम
 क॥ ॥ कृष्णस्कानयिन॥
 उंयनकाहणी॥ ॥ यामका॥ उं
 सद्याजाता॥ ॥ कृष्णव॥ उंयवि
 गद्या॥ ॥ दमित्र॥ उंयउवहस
 १॥ यजायजाति१॥ स्या१॥ सुवीया
 वीने१॥ सयाय१॥ याया॥ ॥ लडा
 हाकंकयि॥ उंयहिनयगरे
 ॥ ॥ दीगकंकयि॥ उंयवध

कान॥ ॥ वलंगन॥ उंयस्वस्व
 यानिषउनीय॥ उंयवावसतिक
 ना॥ मराज॥ उंयकिरासथयक
 नवथयोपुर्म॥ ॥ उंयसि॥ उंय
 यमूर्का॥ वठावृकडकी॥ वसरु
 लीरव॥ ॥ द्वासदाया॥ उंय
 दासिधुवाया॥ ॥ अंजनउंयक
 ॥ उंयउंयनित्तध॥ ॥ स्वकया
 य॥ ॥ र्थकात्रिनीनर्मिधमरु
 नलाय॥ ॥ यत्रयत्रियजाग
 नग॥ यत्रयत्रिय॥ ॥ सिंधुकाय
 पत्रमन॥ उंयसिन्दुगानाहणी
 सुमरुमरु॥ उंयलडिदि
 द्या॥ ॥ सिंधुमरुदविय॥ उं
 जीयन॥ ॥ सिंधुकायावल
 सरवतसदाहायममण्डलल
 उंयसमकलंतय॥ ॥ चन्द्र
 नादिसरु॥ सिंधुवाद॥ ॥
 द्यालरुनमला॥ उंययरुस्व
 सीमरुदयन्दिविचन्द्रमसि
 धिर्ग॥ वदाहृतस्यानदिशो
 त्य॥ यमसदद१॥ गीजायमसे
 तद१॥ गीजायमसदद१॥
 मर्म॥ ॥ यनि॥ उंयमना
 मि॥ ॥ बधलासलयनय

प्रथमस्तुतिकसर्वसासकन ॥
उत्तायकवलायकलाय ॥
यद्वनचनत्रहियद्यत्रसा
स्वर्ग ॥ ॥ आगतशकाधनि
यजिग ॥ ॥ वनपासनययि
यमन ॥ स्वस्तिवाचनं व ॥
७ ॥ ॥ वियथायककाय ॥
यधयइसिंहासनसत ॥ ॥
यथागकिस्त्रयाइनि ॥ रा
जा ॥ द ॥ यजमान ॥ द ॥ भावा
नि ॥ ॥ भक्तिकयष्टिक ॥
यवधन्यादि ॥ ॥ वलिहृग
र्ग ॥ ॥ याकृष्णदिदन्कि
दानं ॥ ॥ संपूर्णइनि ॥ ॥
आसीसादिकारमात्रकधन
क ॥ ॥ साकमाधमसामा
धदाय ॥ यकृष्णदिगयमान
कासं ॥ ॥ न्यासत्रिकाय ॥
सूर्यसाहिधाय ॥ ॥ अति
धकचन्दनीदिस्तु ॥ ॥ श्री
वा ॥ ॥ सरुंआत्रयियनि
या ॥ ॥ गजयल्यादिवाधन
सक ॥ य ॥ ॥ ॥ ॥
निष्ठागधनविधि ॥ ॥ ॥

दाधवदुयकक्रियत्रय्य
रुसिंहासनसचाकात ॥ ॥
थयकनरुयाकलनैर्कल
स्वर्नहाय ॥ ॥ कप्रचिकन
विय ॥ सितरुयावषत्रवि
विय ॥ संयायावथकत्रिवि
य ॥ सृगानिविय ॥ संवविय ॥
थकलियचाविय ॥ ॥ धन
समुत्ताविय ॥ वक्रविय ॥ री
मकठविय ॥ ॥ स्ववयापन
वयागविय ॥ ॥ सकलसं
विय ॥ ॥ आत्रसदगसादय
त्रिसयुजाकर ॥ ॥ वाक्र
वादिहोत्र ॥ साकमाधवि
यमाकास ॥ ॥ भात्रसयि
कासीयाइचायककाय ॥
रुंनिगरीधात ॥ ॥

मथयसुवनविधिर्विक्र ॥ ॥
नार्थसन्नविधान ॥ मासदिनीयगती
यवष्टबाकार्य ॥ सुथयत्रवनरिद
थायससायावगुतिर्नवकास्यदि
॥ यवगीवाक्रुणर्थकादियवगिनि
स्त्रानं ॥ ॥ थकादिसयिवदक

[illegible]

उनाययि॥ अयवर्द्धाय॥ वरु
 ॥ उं धुवा॥ ॥ उं दयादिन्
 द्यादिषु॥ ॥ उं गङ्गाकर्णाय
 दामियगयश॥ पूर्व॥ उं क्वृष्ण
 यमयूनाधियगयनम॥ यथि
 म॥ उं यं भकर्णयकलाधिय
 गयश॥ दक्षिण॥ उं लंदादला
 यलाल्याधियगयश॥ उक्त
 न्तिवर्द्धयवर्द्धयानमोय
 ॥ ॥ पूर्वदिक्षान्॥ उं न्द
 यश॥ अग्नि॥ यम॥ नैर्मृगि॥ वरु
 ण॥ वायु॥ क्वरु॥ न्नीलान्॥ उ
 र्द्ध॥ अर्द्ध॥ ॥ चरु॥ ॥ उं
 गगयगयश॥ अग्नि॥ उं गुरुव
 श॥ न्नील॥ उं यानिन्त्ये॥ नैर्मृग
 ॥ उं क्वृष्णालायश॥ वायु॥ ॥
 पूर्व॥ उं दयवीत्रायश॥ अग्नि॥
 उं क्वृष्णायश॥ दक्षिण॥ उं मनि
 म्वायश॥ नैर्मृग्या॥ उं मृगलरु
 स्मायश॥ यथि॥ उं अग्निमृखा
 यश॥ वायु॥ उं दावायश॥ उक्त
 ॥ उं विष्णुमृखायश॥ न्नीलान्॥
 ॥ ॥ नन॥ पूर्वदिक्षान्॥ वरु
 उं रुंदायश॥ उं विष्णुमृखायश॥
 उं क्वृष्णद्वारालायश॥ उं उमान
 दनायश॥ उं अग्निमृग्यायश॥

ॐ हस्तिनामिमीताय ॥ ०० ॥ वरुणि
वाकाय ॥ सुखलवयावजवसल
मयमललसराजर्जलासर्ग ॥ ॥ थ
थं कृणनयावखवसकाय ॥ सुख
लवयावमललसर्ग ॥ ॥ थ ॥ ॥ थ ॥ ॥
धीयुजा ॥ ॐ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ननावधुमा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
दिन ॥ ॥ वरु विषय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
सिंधिलंदविषय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
निनिविगय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
उकायावयूरुषका ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
ससथननि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
सथनक ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
रुगेयुधित्री ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
क ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
विदुतिमिग ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
शानियाद्विपूकमय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
नारिषक ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
शयुजा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दयलो कलजिलिखदायाथना
य ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
मल्लगकि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
यस्यकी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
ननाथदवदवक ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

उवर्गंगकारिक ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
नमस्तेक ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
धामि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वायनमी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वयगयागादि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
राग्यसकानेधन ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
नमस्तेक ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
मिर्ग ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वायनमी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वदि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
धामि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वाग ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
अगर्ग ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
दिददि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
गृह ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
क ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
ॐ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
याना ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
मना ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
यिखा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
कार ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
मात्र ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
लध ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
मल ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
युवा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
लोखन ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथगीमनातयनविधि ॥ ॥ ॥ ॥

वधममर्तुमासवधसकमा॥
 अष्टमवाचुगदिवस॥ वाकल
 दिना नका नय॥ नेक संधि
 विष्णुयवोदकयाय॥ ॥ कूल
 वलु सिद्धि निलठ गलितवना
 वापठिगल धननासुद नवमि
 वस न्याम संधी वसादि जू हर्म
 गल कोय गल ना वनेन ॥ वाय
 ठिया मि विधि ॥ शिवयक गदायम
 मध्वसवा सुदवनाम योयकमा
 ल ॥ सधु जयादवनलासगे ॥ द
 विप्रसिधिर ॥ कृगवा ३ येसिवला
 १ वरंगना १ दनको कयि १ डोको
 कयि १ लसयता १ गजानमाला
 १ वरसि १ यमानिका १ यागका
 १ कूलद्वोदगगसिधिमूठग
 सिधिकायथार्गसुसगे ॥ ॥

अष्टकलगनीधलखधनः
 साइइगमाल ॥ उललका येयवा
 नठाय अवल ययंठः रुलादक
 स्नानकलण येययलवगे ॥ ग
 उधलानगेवसरुलग ॥ सीहिक
 लणसगेमाल ॥ अष्टवसुवध
 याकुवधानदोयकावग्लगत
 धनक ॥ ॥ वधाय गालाउय
 कलणनगे थयादुवनलश्री
 नायायलवगे स्नानधनकावकु
 नलाखनकोखायकाव ॥ थक
 खासगाय ललुठठियकूठ मि
 चकिमि यनकि लीसरिमि ॥ ३

हलथनचालमस ॥ झादुयाग
 नम्यादयकावथधनकाय
 कायाउखानययंठसुमखलूय
 कलसगाअरुग ॥ थयाकुवख
 वलयाइकाडोलायाइका सीउल
 ग ॥ ययकानठनकावधनला
 वनशीनोयायवलकमायका
 कग ॥ कसकनसिधिमूठग ॥ रु
 लकरुयातवलिवठका गलण
 मयादियमालकोयवनग ॥ य
 नमिधुजामखानमालनाग ॥
 धनलि ॥ ॥

यूनखल ॥ अष्टयादि ॥ सुयार्थ
 ॥ १ ॥ सिद्धिप्रसु कियार्थे नि सी
 मकानयनार्थरुतवध्रदिकल
 गलचननिमिअर्थवाक ॥ वधुन
 नमस्त्राययशरुन ॥ ॥ य
 नखल ॥ ॥ अष्टखलमललाका
 प्रति ॥ अष्टनमस्त्राययासाधया
 ययुजा ॥ अलमि ॥ ॥ कृगलि
 कर्मयाय ॥ यथशविधिमकु
 नकलणचन ॥ ॥ अठवायोमी
 गिधानाचन ॥ २० ॥ ॥ विलया
 अकलणयुजा ॥ अठवायश ॥ ३
 डीउग ॥ १ ॥ अठवायश ॥ अठ
 विष्णु ॥ २ ॥ अठमायायश ॥ अठ
 नावगी ॥ ३ ॥ अठयायश ॥ अठ
 वधुग ॥ ४ ॥ अठनिलायश ॥ अठ
 विष्णुपुर्क ॥ ५ ॥ अठनलायश ॥
 अठदिवावा ॥ ६ ॥ अठयय

वाय२॥ अथ नदिष्णु॥ १॥ अथ
 लासाय२॥ अथ विष्णुनाठ॥ ७॥
 अथ कलशमस्तु॥ - ॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible][illegible]

वेसुनचिनकटिलालं वकुचमिद
 छुचैतयीआगयदाविमकल
 मसुकननमयूर्कूर्कै ॥ ॥
 लम्प्रीनायाय (धैर्यं) शिउवनन
 मितावेनगजासनस्कावामयुक्ता
 गद (लम्प्री) मिताकेनधत्राधमभा
 काथरुठ ॥ विष्णुर्वैक ॥ वासा
 दनऊरुगकनादकि (लचक
 (ल) लोकीमादा (ग) रवयधधत्रनि
 कत्रगले ॥ ययनमेनमासुगे
 ॥ अयनधमदि ॥ ०० ॥ मालकर्म
 सय ॥ ०० गिकलगात्रतः ॥
 नताथयदासाधनः ॥ उदवस्य
 खति ॥ आयास्मलीचत्रस्फाली
 ययकूर्क ॥ उययय ॥ ००
 तियनयैर्क ॥ उअनिमितामी
 तिसीमार्जनः ॥ ॥ उमहीनयि
 यासीनिधनन ॥ उगमोस्यव
 धूग ॥ वकुचजिनन ॥ थयाय
 वनकाठग (थयविगन ॥ उका
 तल कसाय ॥ उअदिखेरासा
 सि ॥ उम ॥ उददवयारुवि ॥
 उयागयस्यारु ॥ उउदना
 यस्यारु ॥ ककाय ॥ उमीम
 स ॥ उगगलसकन ॥ उरुवि ॥
 वृदहिरुवि वृदहिरु ॥ लेसि
 काय ॥ उकूर्क ॥ उमि ॥ कूर्कन ॥

उदववदमसि ॥ हासासन ॥ उ
 यत्रायुग ॥ हाये ॥ उदवाव ॥ ००
 विता ॥ लखंहाय ॥ उदवस्य ॥
 संधध ॥ दवनेन ॥ उदवस्य ॥
 गकवाकात्रय ॥ उकात्रलश्च
 कचत्ररंगसन ॥ लखदूधन
 वाकू ॥ चत्रसिपूजा ॥ उयजा
 यत ॥ उ ॥ ०० ॥ धवकीच
 त्रुंदमिसकूय ॥ कृ ॥ आहा
 वगल ॥ उअयहगति ॥ भगल
 पुनैगले ॥ उतवादिमि ॥ उद
 वस्यारु ॥ उवदविअयकूर्क ॥
 उगागात्रमित ॥ यतयैर्क ॥ उ
 ०० ॥ खति ॥ वालनेगा ॥ घृ
 गादिद्यानर्क ॥ उअनिनकस्य
 यजमातायविंदस्वाहा ॥ उवि
 पुनकस्य यजमातायविंदस्वा
 हा ॥ यत ॥ लखनहायचत्रसे ॥
 उकात्रल ॥ वृलिविसेर्कन ॥ अ
 निसुक्काल्य ॥ ॥
 उमविउस्वाति ॥ आआत्यवर्क
 ॥ घृगावर्क ॥ अनिदगकि या
 ॥ अहादगसमिधहास ॥ ॥
 अज्जनाम ॥ उमगलानय
 सारु ॥ वधूनयूरययादकि ॥
 स्तभय ॥ अने ॥ घृगाहुगिय
 म्मायातआदिनविय ॥ घृगा

रुतिधूर्वा ॥ गिलाङ्गि ॥ कल्यणि
द्वानिलाङ्गिधूर्वा ॥

ननाय ॥ कर्मसवत्रहाम ॥ उय
जायतय स्वाहो ॥ धृतेता ॥ उदय
जायतय उययन कृष्ण ॥ अयोग
॥ उं म ॥ अथ सुष्टिकृतय स्वाहा ॥
उदमग्रय सुष्टिकृतय योग ॥
यत्र सदाय ॥ यत्र हन ॥ यत्र चर
हाम ॥ ॥

यद्गुया वीविनेन व यिवनेन व व
वकिवायावर्क ससादावनिर्म
कृतयाय ॥ उं न कोरुन ॥ वलि
स ॥ उं अक्षत्रात्रद ॥ अक्षकलज
नमादङ्गयकवधपत्रषण ॥
उं श्रीजगमेन ॥ उं ल्यादिन ॥
स्नानधनकाववध स्वतत्र मुनति
यक ॥ ॥ थकादिनि स्थिलासा
लावलखलथस्य यद्गुमिहा
सनयायीविनेन स्वस्तिक सस्वने
वसाचक ॥ ॥ सादिस्थानक
ननकसाययथेन धनक ॥ ॥
म्यगुरुताउ यासुलन सयंकास्य
नयांसयाकानदान ॥ थकादिनि
स्थ ॥ उं स्ववाचनेय ॥ ॥ यत्र
न अर्थयार्गलखनहाय ॥ उं स
स्तिन ॥ उं दगि ॥ अक्षर्मनलया
योभयतासविय ॥ ॥ यत्र
नद्रविनि सिनयका यावमीया

मालसत ॥ सीमनी सीयाय ॥
उं उव ॥ उं स्वसुय ॥ उं रि ॥ उं
उं सवीत्रावीत्र ॥ उं सयाययावेवि
नयामि ॥ उं नवाय ॥ उं मसत ॥ उं
उं उव ॥ उं स्व ॥ उं सयुववगविनयामि
॥ ॥ दनकं कथिडाकाकं कथि
नयाय ॥ उं स्वस्तिनामिमीना ॥
यसिवनानसं कथ ॥ ससावाथ
संथाय ॥ उं वयवसंतिवनेन
थिक्किय ॥ दथयासंतिवनेन
कथाय ॥ उं कनवधनसमू
कमसु ॥ उं स्वस्तिवाचनं वळ
न ॥ कमानिकानयितुं ॥ उं अथ
वोड ॥ यागका ॥ उं नकाहर्ष
॥ ॥ लीसयता आदियंताक
॥ उं हिन ॥ उं गुरु ॥ वरं नत ॥ उं
अंथ ॥ उं व ॥ वगमि ॥ उं अय
मूजावतावृकडुकावरुलि
नीरुव ॥ ॥

सिद्धिनिर्लदविय ॥ उं वसाय
विगम ॥ अर्थयागलखनहा
य ॥ थकादिस्थिस्थिमहनला
वक ॥ यत्र यस्यां स्थिक्कायव
ध ॥ उं श्रीधर्गलक्ष्मी ॥ वत ॥ उं
यदयक ॥ अंजननवलक ॥ उं
नीललाहिनीरुवगि कृष्णागार्क
यंजन ॥ नधक अस्याजायन
॥ सतिर्वधवधन ॥ अंजनसा

समाविय ॥ नमः द्वादशकु
लमहं संयदय ॥ ॥ दक्षिण ॥
नगलुमानकलनदानयगिष्ठा
र्थयथाष्टद्वहिनेष्टदक्षिण ॥
स्नानगन्ते ॥ ॐ यमादकनमदव
युगयोगादिवर्द्धन ॥ लक्ष्मीसंगत
लोराग्यधनधान्यवर्द्धन ॥ न
मस्तस्मै कृमानायकान्तविवरा
वित्त ॥ दिद्यात्तलालकालं वि
भाषायनमासु ॥ ॥ कर्तन ॥
अथ कृमानयावधूतवयकर्त ॥
वसोवर्क ॥ कृमालकलनादिह
वनन ॥ गालकालककयल
नायायलसनाश्वनसकुनि
यगय ॥ अथ कृमालकल
राजकुनि ॥ राजसर्वविनीय
न ॥ धधनकावआरुनि ॥ ३ ॥ पू
र्ण ॥ ॐ राजनमधनां ॥ ॥
वीलनद ॥ धधनकावआरुनि
॥ ३ ॥ ॐ यावकान ॥ ॥ वंन
नायायलसमहालकर्मन ॥
आरुनि ॥ ३ ॥ ॐ वय ॥ ॥ ॐ आ
रु ॥ ॥ गिरवध्वन ॥ आरुनि
३ ॥ ॐ यविगुष्ठा ॥ ॥ मृज
दियवस्त्र ॥ नीगदग ॥ अवेता
न ॥ आरुनि ॥ ३ ॥ ॐ विध्वन ॥
३ ॥ ॐ ॥ ॥ वीनकभवा

स्थान ॥ आरुनि ३ ॥ ॐ विष्णु
नाट ॥ ॥ यून ॥ यूनयलवउय
मकु ॥ वधनठनक ॥ ॐ साम
वनागानामानूषी ॥ यजो
विमकवकुआमीन ॥ ॐ वी
र्यं ॥ अमकदवीक्षितानदी
मसन्निहितागस्यानामगृह्णाति
धनवधनठनक ॥ अमकदवी
यगवगीरुवकु ॥ ॥ आवा
र्यं ॥ थवतं आरुनि ॥ ॐ आ
व
कृतया ॥ ॥ ॐ यूनयगिष्ठा ॥
॥ ॥ गग ॥ संस्था ॥ ॥ दक्षिण
गि ॥ ॥ ॥ कथोष्टिक ॥ ॥ याम
लकृडा ॥ यवधान्यादि ॥ शर्म
थसामाठदाय ॥ थयाथसाम
ठसमृक्तथनमाल ॥ ॥ वलि
वृजा ॥ नवशदगर्न ॥ ॥ दृगदी
यवृत्तिकाराम ॥ यायविकृष्ट
म ॥ वलिहृनदक्षिणदान ॥
सुप्रवसासन ॥ कृमानयायातहा
थदक्षिणविय ॥ ॥ गग ॥ सं
यून ॥ वधुजवदासतयावधवक
जानकर्त ॥ ॐ दवाना ॥ ॐ आ
यायनि ॥ आसी ॥ ॥ जायम
ललल ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
धादि ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
व्याविसर्जन ॥ वधुववसगया
वधादिगस्यवभाकेलसेन

तिष्ठकं ॥ धनजनलस्यनकरिवा
 यकवधलयादकाउवलावकं ॥
 यनर्धसुष्ठुगगदीदं ॥ मरु
 नत्रथियमिष्टा ॥ वलिईरवायि
 खाक्याय ॥ सामरुद्रावकं ॥
 ज्ञानमालकोतयाव ॥ मूर्था
 दिखानतने ॥ यल्लविसर्जनं ॥
 नात्रायल्लकविनगाथ ॥ कू
 मानयागाययकंनवनिधव
 नवः सकलगविद्यावधवकं
 कय ॥ ॥ वधसुष्ठुगधत्रिध
 यनथियकावस्योजाकागाय
 क ॥ खासयायजाककायाय ॥
 ॥ धनसंनिनिर्गुणीनारा
 यल्लव्युजायाय ॥ ॥ नूनि
 ममनोनयनत्रिधि ॥ ॥

धनसंनिनिर्गुणीनारायल्लव्यु
 क्रियत्रवस्युजायाय ॥ ॥ अ
 द्याविष्टुनमस्कात्रन्यासाद्यया
 गवृजाआत्मयुजा ॥ ॥ गल्लोयामी
 तिद्यात्राद्युर्ग ॥ ॥ ॥ कलवादि
 द्यादलमूर्गयत्रियादिद्यादलम
 कथल्लदमासर्ग ॥ ॥ धन ॥ ॥ ॥
 दसुके ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

द्रिया ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 विष्टुत ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 मूदात्रा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 मभिकरं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 नव्यानि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 मनसकाम ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 कदया ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 वधु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 यल्लुसिगनूमा ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 विक ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 धस ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 तिथिसंवत्सर ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 कगाजा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 लिनी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 तिर्ज ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 नाहुतिपुमिष्टा ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

वीरवीरमजीजनथ ॥ ४ सात्ववीर
वगीरुंयास्मान्नीरवनाऽकृत्त ॥
॥ ॥ अथमामयाजवदुल्लखन
सलमकु ॥ ॐ हूँ न ० सुन मुकुं सु
क ॥ त्वयाययिपीनम (नगरीरस्य
म (धु) उस्मियससमधमकमधन
समुदिव ० सदनमां विषय ॥ ॥
खवदुल्लखन ॥ ॐ यस्सुन
४ गगनयोमयाखयात्रलधोवस
विद्य ॥ सदगयनविषययनि
वायानि । सत्रसगीनमिहधानव
क ॥ उदयनत्रिकमन्त्रमि ॥ धनस
यजानकुलानिस्मान्कुलयागका
यन ॥ अमनया २ थयादवनसखि
न (धलावयुं नयावदवनते ॥ द्वा
नसाविकनयं सदागसाकुलरुं
गवसंधनायाथयनयाये ॥ ली
खद्यायलथदगदुतेमामाल ॥
अगसिंधजजामस्वाननयकंद
दन ॥ युं न ॥ थयन ॥ ॐ आथा
दववजगथयथदववजगथ
यवमस्या ० सुनिकायसिसुनिका
जगथ ॥ ॥ वायनयनवालाजा
यावनागीकुदनयावक ॥ ॐ स्वास्ति
वायनयठय ॥ ॥ वालकथि
आयावायमाउदय ॥ ॥

द्वारसमयकठिसान ॥ वायन ॥ ॐ
अथादि ॥ सुनिकाविस्कायननि
मित्यर्थवाक्य ॥ ॐ आदय ॥ अ
नमस्कारन्यासाद्यवागयुजा ॥ ॐ
लकनयावमालकाग ॥ स्वात्मयु
जा ॥ ॥ मयकठिसं ॥ ॥ ग
यगीनसाय ॥ ॐ गलायामीति ॥
अल्लुदली ॥ ॐ यदवा ॥ यनिस
मूदली ॥ ॐ मानसाके ॥ अयलय
नी ॥ ॐ हिनयनगर्तयदीलिरवत
॥ ॐ सदसस्यति ॥ धनययन ॥
ॐ वीरययम ॥ वीरिहयन ॥
ॐ त्वविरुति ॥ कादुगहन ॥
ॐ हूँ न ॥ कादुनिधय ॥
ॐ गायगी ॥ अन्निस्कायन ॥
ॐ मयिगृहामा ॥ ॐ न्धनाका
डा ॥ ॐ मर्मातिग ॥ अन्निपूजन ॥
ॐ युष्ठादिवीति ॥ हूँ दमासनादि ॥
ॐ अन्निमीठति ॥ अकवागन ॥ ४
॥ हूँ दालाकयालयुजा ॥ ॥
॥ ॐ मिसिप्रिथि ॥ ॐ साहा ॥
॥ ॐ वीरुदव ॥ ॥
॥ वीरुदव ॥ ॥
॥ वसंधनाया
सस्वानन ॥ ॐ वसंधनाये ॥
ॐ वसंधनामूक्य ॥ ॐ वसंध
नायेवलिगृह ॥ साहा ॥ अक
रुनादिअगर्गभादि ॥ वलिनेव

नि १४

बाल ५

नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 वाचनलखवयवदकलखवन
 हिमय ॥ उदवस्यत्वा ॥ कोलिया
 नमामरुकी कलिमलासग ॥ थर्क
 दिश्यादिनसकलकविय ॥ चन
 सिंधुआगीवोद ॥ उयगयाना ॥
 वालकयार्त ॥ मामयार्तवाहार्त
 थर्कादिथर्कादिनकी निमार्त माल
 कासुवियआगीवोद ॥ ॥ अथ
 सिंधुमूढआगनयालखवयदि
 नकादावयत्रादिनसुवियनव
 मथिसु ३ विस्तरुनैगव ॥ ॥
 अथवाक्कादि सुविचिवियमा
 ल ॥ कासु ॥ नमो भगवते वासुदेवाय
 ॥ उदवागमु ॥ सूर्यसाकि ॥ अके
 वियमाल ॥ निधेवकाय ॥ ईखा
 यिखाकाय ॥ नूतिनादीमखा
 दियवदकजातकर्मविधि ॥ वा
 द्वायसाययागडासयायमाल
 मियकाउस ॥ ॥ ॥

वृद्धकादुदिनसददनवर्तन
 वृद्धलदात्रेसगदावदाकविय ॥
 ददयाथवमजात (थयावक ॥
 ॥ ॥ अथ वृद्धकादुसाया
 वायमाल ॥ ॥ यिनकालिथिया
 लयूजाविधान (थयाय ॥ वडी

जानावृत्तवाक् ॥ वाहासुधिसु
 यक ॥ थर्कादिसुधिवसुधिविय
 ॥ वाक्कासुधिसुधिविय ॥ ॥
 चवधिवगथकादुनिस्तरक ॥
 सुतिकानिवनकदधयिनकागा
 सतिनिस्तरमाल अथयानिव ॥

वाक्कादुमालकय कूत्रयाय अ
 गवमुनेलयक ॥ सासनयलम
 काववाचक ॥ ददनथवमजात
 रुकायावक ॥ थर्कादिनीनसु
 लवमुदिविय ॥ ददनदात्रेसव
 रंगनहन १० गदावदाकविय
 क ॥ थर्काकादुयाविधान ॥ ॥

थनलिजिमनकूकादुलकाया
 य ॥ लनेकनया सासुददनवाच
 क ॥ ॥ वालकमानेयावक ॥
 थर्कादिसुधिवदकयाय ॥ ॥
 ददथायनयादावसुधियाथिहात
 साउलिसमालकागदावददन
 यूजायावक ॥ विधि (थ ॥ सासुयव
 दात्र (थ ॥ ॥ अथ वृद्धकादु
 कांथायनमयागसा थने लेस
 थरुलथयसायाव आवमठया
 २ (थसस्विनथेल यलोसनया
 यनियत्रयायनवाहाल यीन (थ
 वसुधियायति ददनमलानवल
 न लखन ददममाल ॥ वरन

नारदीये॥ अस्पृश्यमंत्रो न च अतिगुर्वक्ष्यते
चित्तो नादद्यात् नाम विवेकास्तथा च विषमा
हरं॥

अनसक्त्यात् ॥ अगर्गं धादि ॥
वालकमामनययकोवर्थका
दिस्थितामालावस्थसिक्तसर्ग
निर्मकन ॥ उं न कोरुन ॥ वलि ॥
उं अथवावनि लखनहायः ॥
उं स्मृतिन वृद्धे नि ॥

क	ना	मृ	आ	यू	वा	अ	म	द	उ
अ	अ	व	क	क	रु	उ	म	मा	ठ
उ	व	व	क	क	रु	उ	म	मा	ठ
उ	व	क	क	क	रु	उ	म	मा	ठ
रु	वि	जा	वि	अ	क	मृ	यू	र	क
मृ	य	न	मि	न	ना	य	उ	न	र
य	या	न	मि	न	ना	य	उ	न	र
न	न	न	मि	न	ना	य	उ	न	र
०	नि	न	मि	न	ना	य	उ	न	र
व	व	म	उ	न	अ	त	थ	न	
मि	न	म	स	इ	द	व	लि	ना	मा
रु	नि	म	स	०	दा	वा	ल	रु	न
रु	उ	मि	द	मृ	व	वा	ल	मा	रु
वा	म	स	दि	न	वि	ल	ल	मा	रु

कलनादिवानननकमामन ॥ अर्थ
वन्दनयज्ञायवीनयूयधूयदीयन
यक ॥ स्मृगुअगर्गं धादि ॥ मग
रुं गाठवासठननद्वारक ॥ नामवा
याधनगर्गं धादि ॥ वालिलरुनरु
चक ॥ द्रवयागचवर्तदक्षामासग
सिद्धन ॥ यठिलरुसगोशचननेषी
वसवायमालर्ग्यगुसलाचकी ॥
॥ वायनवालिउवद्रुससनाम
कीन ॥ यूणीरुसमाखवद्रुससकीन

॥ ॥ आगलमालकानमावगल
सयादयनेसुयकथकादिस्थिवा
यनगव ॥ अनामिकाउष्टन ॥ उं
यागयसाठमिर्ज ॥ आगलकाय
॥ ययकलककाय ॥ ॥ वालि
पृथयागलेखनहायगोशचनन
गयक ॥ दारुलखानरुकाविय ॥
वाद्रुलदकिना ॥ वायनकलसक्त
॥ ॥ रुसकनगयाव ॥ कलगाति
यकथकादिअदिनचदनसिद्ध
नसक्तगोशदी ॥ उं यगवाना ॥
वालकयाग ॥ मालकार्मविय ॥ म
रुं आगधियतिष्टा ॥ द्रुवागिष्टाका
य ॥ अकवियसूर्यसाकि ॥ वाद्रुल
राजर्न ॥ वृत्तिनामकनविषि ॥ ॥

अथरुलाननयाननविधि ॥ कायया
गतकिचयद्रुनका ॥ स्मृवायगग
किठयद्रुनकाइना ॥ स्मृनादि
नित्याश्चनधूनकावर्थकादिस्थि
यवदकयाय ॥ यउमानामकय
गुरुलाननयाननविमिह्यर्थवाक ॥
॥ ॥ कलगावायनीथदिकादिग
सठनसगयागसगयवायठिव
यावास्यानअकनआगनवकाल
सयागननलदयठिलरुन ॥ उ
नलाखकलगस ॥ थयाउवसकी
मात्री ॥ गगसवलि ॥ गगउठाथ

द्वालिभुनरववसथाय ॥ द्रवतव
हिद्विनिनादिद्रुमकन. सिधुमरु
वाय ॥ मयनिनिन ॥ मयुनयातिन
॥ अतलिमातकावायाव ॥

वायननवर्थकादिननवहामया
य ॥ यथा २ विधिमकुलकलेशाचन
॥ मालकायुजा ॥ अथयदोसायन
यत्रसाधनयथाविधान ॥ अग्निदलकि
या ॥ अष्टादशसमिधदानं ॥ मकुलाय
न ॥ ॥ अग्निनाम ॥ ॐ शुभं नयस
रु ॥ ॐ ॐ न ॐ न ॐ ॥ उग्रराद्या
नग ॥ वरुहमि ॥ वेदाहुति ॥ सिधिया
हुति ॥ ॥ विष्णवेष्टुगाहुति

मकुल ॥ ॐ दवीवावमऊनयनदवा
साविधनया ॥ यनवावदकिभना
मकुलमऊनदुहाना ॥ धनवागमान
यसकुनकुसाहा ॥ युगनत्यागदुद
वाच ॥ ॐ दवीवावमऊनयमि
त्ययकावाजाना ॥ यससुवागिदान
वाजादवापुठिहकल्यमानिवाजा
हिमासववीनीजकानविष्णुभूषा
वाजयतिऊथयसाहा ॥ ॐ दवीज
वाजायत्याय ॥ ॥ गतध्वनरुम
मकु ॥ युगन ॥ ॐ या ॥ गतान्नमणीय
साहा ॥ ॐ दया ॥ दया ॥ ॐ अयानेन
धाननीयसाहा ॥ ॐ दमया ॥ माय ॥
ॐ वरुहयुवा ॥ धनीयसाहा ॥ ॐ द
वरुहयुवाग ॥ ॥ ॐ ॐ गत ॥

गीसाहा ॥ ॐ द ॥ ॐ गाय ॥ ॐ यजाय
नथसाहा ॥ ॐ दयजायनयत्याग
॥ ॐ अयनयसुष्टिक नथसाहा
॥ ॐ दमनयसुष्टिक नथत्याग ॥

वक्राचनीनवदलाकयालकल
भादिहकलसुयुगाहुतिविय ॥
मिलाहुतिसकलसुविय ॥ कल
भादिपुतिष्ठामालको ॥ ॥ तिला
हुतिपुष्ट ॥

तगायथाकर्मकात्रय ॥ वालक
मामतव्यकथकादिसुलेखधार्थ
सक्तिकसर्वसाचकसुत्र ॥ यहुति
हासनयायविने ॥ ॥ निर्मकने
॥ ॐ नकाहुन ॥ वलि ॥ ॐ अक्षकव
दधि ॥ अद्यवागलेनदाय ॥ ॐ सुकि
न ॐ न ॥ ॥ ॐ कयुष्टिकयासात
नवालककुचक ॥ ॐ ॐ ॐ ॥
कलभादिस्थाननत्रकसागयर्थन ॥
अथथकादिनीसुमगरुतालदाम
उदनदाय ॥ कालसयागकनलद
नरिवक ॥ मननिनयतनतचकसा
ननकुचक ॥ ॥ मयिनिनीसगया
गालन ॥ धाला ॥ धाला ॥ ॥ यमसाहा
का ॥ मयन ॥ वीयाल ॥ मल ॥ नलिक्का
ललदुवा ॥ उलनकधन ॥ थासामाहुन
थनदोय ॥ अगलमालकन ॥ धिका
दिसुनासिचकाव ॥ ॥ मयमनिचक
युनवानक ॥ ॐ ॐ ललागनसमुद्र
यवधसन ॥

स्वाहा ॥ ५ ॥ कृतं दत्तं कृतं न कृतं ॥
 वनिकं लंकयन्नादिन कृतं ॥ ॥
 लाकृष्णं तज्जगत्प्रतिष्ठाया दत्तं
 वनिकं ॥ ॐ हं नमसि स्वाहा ॥ ॥
 त्याग्यं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 सिचकं वोलकं मर्म ॥ अगलमा
 लं गच्छाय ॥ धातुमादिधामर्म
 रुजानकं रुजानकं ॥ आययका
 वययसगस्यं रुनमालका ॥ अग
 नतयावकलंककाय ॥ ॥ लुकि
 कामामनछुखायमाल ॥ वव
 चक ॥ लखनकाय ॥ निनसाला
 मुखछुविदिया ॥ ॥
 धनव्यं रुनमस्यं ज्ञायादव वालक
 याकृष्णं मथियं कत्वाधनअनिवि
 य ॥ मरु ॥ ॐ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 मधुमास ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 त्या ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 यदि ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 वरुं ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 अथ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 ॐ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 जनलाखनकाखायक ॥ ॐ ॥ १ ॥ १ ॥
 विदुदा ॥ अथ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 चतमिधुमछुला ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 चययाता ॥ ॐ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 धनलिवायनव्यावधि ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 मरु ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

लमा ० सेनाये का मरु मणि र्जु व न का मरु कृता माया आयुक्षा मरु ध्या ब्रह्म दर्श स का मरु सई सई स्या त्रय ॥ ४

न॥ वा॥ व॥ द॥ य॥ का॥ व॥ लि॥ हा॥ व॥ य॥
ध॥ न॥ हा॥ म॥ भा॥ ली॥

अथ यरुस ॥ सखा द्रुति दल्ला वाटि ॥
 लानिक योष्टिक वाक्कल योजाः ॥
 यवक्षणादि ॥ वलि योजन ॥ नवडा
 दर्शन ॥ दृगदीय वृत्तिका काम ॥ या
 यल्लिकादि काम ॥ वनिह नली ॥ दक्षि
 लादान ॥ ~~वन्ना नमू र्मा र्मा~~ ॥
 नग ४ यू र्मा ॥ ऊवदात दृगनय केय
 उमानने ॥ उंदवा गा ॥ स्यू र्मा ॥
 जायम लललाय ॥ अग गंधादि ॥
 उंठ वृया नसि ॥ दसकन सग याव
 कल लो रिथका ॥ रंदन सिद्धन सगु
 लली द्वादि ॥ ~~मरुं~~ आग धियुनि
 छा ॥ वलि दूरदा विरवा काय ॥
 कामात्री त्वकाये ॥ यरु विमर्जन ॥
 सूर्य सात्रि ॥ वाक्कल गाठन ॥ कामा
 त्री मयू कस काय ॥ ~~वनिह~~ ला
 नयान नविधि ॥ ॥ ॥

जूथचूणकनलकण्ठरुदविधिः॥
 दंक्रियेल. पिदंथल. वदंथलसं
 नेत्र॥ नकर्मथंकादिस्यैवदक
 याय॥ चूणकनलकण्ठरुदद्वय
 तिमिककास्यदयिकयवदकवृ
 द्विषाद्व॥ सूर्योद्यादिविधिथेय
 वादकयाय॥ ॥ आचार्यस्यैव
 नकर्मयाय॥ अमकस्यचूणकन
 लकण्ठरुदमलगुननाममकुन

वाक् ॥ विधिर्धर्मसूत्रकर्म
गतवृन्दकावायमाह ॥ यिवावृत्ता
नृणादिनगय ॥ कोमात्रीसञ्जाकु
सकायावृत्तावृन्दकाकिचकः ॥
ग्राचननीतवृत्तादिनीतव ॥ इत्यत्र
उक्तवर्गी ॥ ॥

गतश्यामस्त्रातादिनिर्लङ्घ्यकमेकानय०
 ॥ यतिगयक ॥ वृद्धाश्रुकरलगायि
 नायकठिनागद्ययकयकगीणील
 श्रीधरगददुधकादुवायकमाल ॥
 ॥ ॥ द्रवदयितायकाय अनिलि
 वाकरुलिनिलिमायावकाय ॥ वृद्धा
 श्रुकरलगादुनागयकयकगीणील
 श्रीवलिनवठकागगससगुलवा
 य ॥ सगुलसवसुग, चंदमण्डलस
 वाकलरुलिनिलिगदुनादिग ॥ समि
 ध, द्विविप्रिवट, वरंगन, लंजीउलि
 कगवृग ॥ रुलकनयचमालकाग

अथथकादिस्य ॥ उअडादि ॥ याद
यकाल्य ॥ धनिथकादिस्यियादक
याय ॥ ॥ धनलिखप्राप्तनयाव
कअयाउन ॥ ध्यथनथवशसथाय
सर्गे ॥ अष्टकलभादि ॥ ॥ अथथ
कादिस्यकेमात्रवालासालावर्यक
लिकातसमस्तिकसस्येन ॥ ॥ निम
कने ॥ उअकाठन ॥ वलिस ॥ उअ
धवायद ॥ लखनहाय ॥ उअसिनि
वृद्धि ॥ कमानयानस्याननवक ॥

पूर्णचण्डिसमच्छालवने॥

[illegible]

यदमललङ्घनत ॥ यरुसक्या
काकलखसखादूलखनखय म
ल ॥ ॐ उरुनवायनेदकनखदिग
कलानयति ॥ ॥ २५ काकलखनक
मात्रयाऊवकनीसथलमल ॥ ॐ
सविणयसूनादवाजयउदकने

महं प्रथि य निष्ठा ॥ कल
जाये ॥ वस्त्रा क म ग या न ॥ वस्त्रा क
न थि सि मा स ग या व वस्त्रा ल र व ल
य ॥ अतिथ क ॥ इर वा यि र वा
का मा नी वा क्का य ॥ यि ना य
नि त य क ॥ य सा द यि नि नि ना
वृ न्द का प्र दि न थ व र स द य नि स
जा य ॥ य दू नि र्वा त व स नि क दू न
वे ॥ ॥ नू ति वृ न्द क न न क
नू र द वि वि ॥ ॥ ॥

अथ वृ न्द क नू नि का डि लि र्वा न ॥
न क स र्वा क्का य क वा यू जा या च
का व वस्त्रा क्क य क ॥ वा न न
ख य क द द न क न व नि यी ठि य
जा या य य वा द क या य थ का दि
स्य ॥ ॥ अं दू व वस्त्रा अ दू क ल
ग ना ग य क य क नी ली ल क्का यि
ना य क्का य सा द यि नि नि ली सा
स्य ई का य ॥ वस्त्रा स र्वा थ द क य य
य र ली वि क्का ॥ ॥ या या लि न
वा च क वस्त्रा दि न स क ल ग ॥ ॥

वा न्द ल या दू स र्वा य ल ग र न ग य
या द स ॥ क र्वा य क द ग य ॥
व ग्वा य द द ग य स ॥ थ ग व र स
उ य न य न या य ॥ ॥ ॥

इ स र का दू या दि न यि नि सि आ वा
उ थ का दि थ का दि न की नी र क म
या यि व या मा ल का र्वा ल सि या च
क ॥ सान ति र्वा क म ध न क ॥ दै ल
लि ति दू स मा ल ॥ ॥
अथ थ का दि र्वा य थ द क या
य ॥ क मा नि वृ जा या य मा ल ॥ य
ज मा ना मू क स्य उ य न य ना क्का
जि र्वा न सा वि जी य दान व दान
रु ग य नि मि क का य द यि क वा क्का
॥ वा दू का यि ना य नि म ल न ॥ ॥

अथ अथ इ स र ल या च क य
थ र वि वि न के म्वा ला ३ ॥ ग न वृ
न द का वा य मा ल वा न्द ल यू ज न
द क्का वा च न ज ल न अ ति थ का
आ ली र्वा द ॥ म र्वा प्र थि य नि ष्ठा
॥ मा स थ र या च का व का मा नी स
आ क्का स वि य थ न ला सा ला व ॥
अ य न थि य का व ग न वृ द का क्का
च क ॥ अ ग य ॥ आ र्वा ल व र्वा र्वा
अ व न क नी म द न क थ ॥ या नि वा
नी च म क्का नि यू ग नो का स म क र्वा
॥ मा म न म न र्वा क्का य मा ल ॥
नी ग न ॥ इ स र र्वा क क र्वा क र्वा
॥ व वा नि ग न र्वा क र्वा स ना वा ल मा
ल ॥ थ र्वा र्वा ॥ ॥ ॥

सक्तियाः प्रीतिना नादिभ्यः ॥
यतिनयक ॥ योगसनातादिनित्य
कर्म ॥ वक्राग्रकलनानय
कयकलीलीलश्रीसकलगाथा
य चंदमल ॥ यितायकायश्च
यग्वत्तइथदरु ॥ अनितिकाय
जलं ग्वयग्वत्तइथदरु ॥ रुनि
नि ॥ थसर्गादलसासुईकाय ॥
यवदकयायमाल ॥

अथवावाग्विधिः ॥ वक्राग्र
नयायक ॥ यथं न अग्रकलन
थव१थयसर्ग ॥ नागयकयकली
थव२थयसकाय ॥ लीलश्रीई
विसर्गं न ॥ यं वडि वं न माल ॥

अथयक्रमयथायं लिखला
मालावर्तखलथयं वं माल
कं सक्तिकसस्यन ॥ निप्रियं न ॥
निर्मकने ॥ उं न काहर्न ॥ वलि ॥
उं अक्षवाचद ॥ अर्थयोग्याल
खनहाय ॥ उं सक्तिनं रूदति ॥
वक्रादिनस्यातननक ॥ धूयदीय
जायमाण ॥ अग्निकादि ॥
थं कादिनिर्ह्यमनरुं न द्वाय माल
वासुधुल आदिनचरुमलुलता
न द्वाय ॥ उं काजातद्वायः ॥ उं

रोगानुयायि म
समावर्तनमयाः

सक्तिनामितीना ॥ ॥ थतलु
काय ॥ वकनगसनाम ॥ उं कठि
लाङ्गा ॥ मृद्विललाठरुकीददि
जातीयादीसृष्टिकम ॥ यादादिमृ
द्वाकयलय ॥ मृद्वादिवादाककि
ति ॥ थनथायसंकालग ॥ ३ ॥ र्व
थाल ॥ उं दीघायला ॥ थनसिंधुस
लुलगादीद ॥ मृद्विआत्रथिसनिः
ष्टा ॥ उं मनाहनि ॥ ॥ मासयठ
याचक ॥ कं वमलासजालु२मा
सर्लखकुलन ॥ लोहं मासः ॥
॥ ॥ लामालावयं न क्रीवायक
नायितयूजायादावखालकुलन
दकिगाजाय ॥ चंदमलुलगयाव
॥ र्वखाचक ॥ लं सिदनक ॥ मागुदू
यक कमात्रया ॥ थनलुकायवि
धि ॥ थानि अलुवकुनलयक लामा
लरुयाव थोक्लिससक्तिकससा
न वं सायकी ॥ ॥ निर्मकने ॥ उं
प्रकाहर्न ॥ वलि ॥ उं अक्षवाचद ॥
लं खनेहाय ॥ उं सक्तिनं रूदति ॥
मगर्हतालयासुधुलनद्वाय वाक्
लवा ॥ अर्थयागलं खनहायववसु
विय ॥ ॥ रुनिनिकायथं कादि
स्यं न ॥ उं गानात्रमित्य ॥ चंदनसिंद
नसुधुलगादीदविय ॥ ॥ गत
वृदकानकखायक ॥ उं सहसा

[illegible]

मायूकं विषय आकर्मवर्गं ॥ ज्ञानं
धादि ॥ ॥ मलुलविमर्जनं ॥ ॐ
द्वयकमल ॥ मलुलसर्वाकर्मद
नादिगुल्लेधाकर्मय ॥ ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ कुमारवत्सलानां ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ कुमारवत्सलानां ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ कुमारवत्सलानां ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ कुमारवत्सलानां ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गुनस्यैकमोत्रवा. वं भावकीमानः
 लासालावः ॥ कृष्णमनयाचकी ॥ गु
 नस्यैथासायावनासिय ॥ गुनसमन
 यादाव. नयणीनन्यासयादाव. क
 मानयाभात्रसऊयथः ॥ नयणीनका
 न१० ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॥ गुन
 वसादिअलकाले लिखतदायः ॥
 ॐ यत्रिहंसा ॥ नयणीन. सकलना
 जयलयधन१० ॥ ॥ ॥ ॥

मृधुनस्य ज्ञानास कक्षा निन
यवक यले याव ॥ कमान्वा ॥ मरु
॥ ३ ॥ यनदायवृहस्य निर्वीस ४ य
र्यदधमृग ॥ ननत्वाय निदध ६
न्यायषदीर्घायुस्त्वायवलायवव
स ॥ मरवलावधीया ७ ॥ ॥ ॥

गंगा मै ज नवी चक मरु॥ मखला
मो जी न दारा व क न मयी वा न्न प

विष्णुसहस्रनाम

सुधेनूतमसीराजनामोडील
 गविलमयीयेथस्यसायमली
 उवासमासुखाकाया ॥ यवि
 एतलीखनहायनयगुजयुमो
 डी ॥ वधन ॥ ॐ वृयदूनीयनिवा
 धमानावर्णयविर्गवनगीमआगा
 गु ॥ खाधयातार्यावलमादधानास
 सादवीसुतगाभरवलये ॥ ॐ गान्ध
 स्यान्मारागोमीलेलातामदाजीनि
 नसवारस्यस्यययवलमाधीदि
 य निसावेवाडिगतैयुगलायधीज
 मूकयवसामगामेनवक्रलेवक्र
 वधसाय ॥ ५ ॥ पुनर्दितीयगुमी
 यवकुर्थययम ॥ ॐ वृयदूनीक
 नि ॥ मंजुगन्धि कुकुलिधनका
 यियीठावकुमानगदोनकाव
 यनयावतागनहाथात्र ॥ ॥
 मंजुवासवियमकु ॥ ॐ युवा
 सुवासायनिवीनआगागसउध
 योरुवनिजायमान ॥ नंधीनास ॥
 कवयउन्नयनिसाध्यामनसा
 यवयक ॥ ॥ ॥
 जानावियमकु ॥ ॐ नस्य्यासगा
 यगीनजाया ॥ ॐ कारवधमन
 कुदिनीयमनिधवगा ॥ नगीय

तागदवर्णयकुर्थसासदवता ॥
 ययमयिगुदवर्णयकुर्मययजा
 यनि ॥ सयमवायुदवर्णसूर्यद
 वगथाधम ॥ नवमसेवदेवयमि
 एतनवगकु ॥ ॐ वृय
 यज्ञान ॥ ॐ अग्निमुखा ॥ ॐ नभा
 सुमर्थ ॥ ॐ वय ॥ ॐ विगुत्य ॥
 स्वधा ॥ ॐ यजायन ॥ ॐ गववाय
 ॥ ॐ आकृष्ण ॥ ॐ विन्ध्यगधन ॥
 ॐ यज्ञायवीतयमयविर्गुजाय
 नयसुहृजयनकाग ॥ नतलसि
 नियागोययवकुलेवक्रवज्र
 साय ॥ ॥ ॥ कुमानगयधन
 ॥ ॐ यज्ञायवीतमिति ॥ कांवायक
 कालसाकुवगिवियनकु ॥ ॐ वि
 गस्यवकुर्वनवलीयंतकायन
 सीधविनेसविद्ध ॥ अनाहनस्यस
 मलचिविष्णु ॥ वनीगवायकिनेद
 वेय ॥ ॥ वस्त्रादिवियमकु ॥
 ॐ यववस्त्रादिविवायवावम
 कुवायसजीअवागिरममृतावि
 धमृगनमिगावनकासयध ॥ ॥
 ॥ लंदवियमकु ॥ ॐ यविध
 शीयलाधस्यदीर्घायस्त्राजनद
 विरन्मिगतं वजीवलागदला

मनः ब्राह्मणे वेत्त पालाशो क्षत्रियो वाट रत्ना
विहोः पेश लोदुं वारे वेत्तो दंडानर्हति धर्मतः॥

ग। स पञ्जात्राय ध्याम समरि स्यायि
श्रुं प्रयुष्मती दय प्रियं त्वा वा स ॥
॥ विवियमकु ॥ ॐ यग सामाया
वायु धि वी यग स ह्या य वृ ह्म्य गे य
॥ गग श्च मा वि द द्य ॥ मा यु नि य य
गां ॥ अथ ह्म र्म ग्नी न द ह्म वि
यमकु ॥ ला हा सिं वा क्क न स क्क न स
मगां ॥ क शि यो द्या ले सिं ल ला ट स म
॥ वै श्व या दं वि न सिं ना सि का स म ॥
य थ ला त ॥ स ध्वां ॥ द्या त्र म ड् म न
म न व म्म द् शो ला न म य द् माल ॥
क मा त्र ग द्म द् जा हा व द् दा व य उ य
मकु ॥ ॐ था म द्म य ना य ग द् दा
य ॥ वि ह्म या ॥ न म ह्म य न रा द द् आ
यू य व म्म ॥ व म्म य द् स य ॥ ॥
था ग द्या ना वि य मकु ॥ ॐ या ॥ न था ॥ न
ग व म्म ॥ उ क्क नी यं क्क सारं त्वा
क र्क यो म्म न स्या ॥ न र्क त्वा क र्क यो ना ज
ना स्या ॥ आ ज न र्क यो व श्च स्या ॥ य क्क य
वी त स र्म का र्क ॥ मि व कि मि
न स र्क ॥ ॐ न व उ द्या व र्ग म दि य
क र्क य स द्वा ॥ उ र्क क र्क हि न य र्क ॥
॥ ल ला हा ज्म लि वि य मकु ॥
ॐ हि न य न र्क ॥ ग र्क नि र्क
वि य मकु ॥ ॐ र्क क र्क ॥
का नि र्क ॥ ला हा र्क ना व वि य मकु ॥
ॐ दी दी य म्म य व ला ॥ ॥ ना हा

उर्ध्व वि य मकु ॥ ॐ स कि न र्क ॥
॥ ना म्म ज ल या र्क को ना ल वि य म
कु ॥ ॐ स म्म ड् ज्म स लि ल स म्म
ता य ना ना र्क न वि य ना ॥ ॐ द्या
या व द् दी वृ य ना न रा य गां ॥ आ यो द्वा
वि ह्म मा र्क व लु न ॥ ॥ क र्क ग्नी लि
वि य मकु ॥ ॐ य वि य म्म ॥ ॥
स र्क कि र्क च का र्क ॥ ॐ व म्म य
क र्क ॥ ॐ र्क दी वि क्क ॥ ॐ न म्म र्क र्क वा
य व ॥ स र्क व म्म स र्क सानि नि वा वि
म्म ना ता नि य ॥ स र्क ना म्म स र्क सानि
नि र्क य र्क क र्क ना म्म र्क ॥ ग र्क म्म र्क
का ॥ क मा त्र ग य न यो ल ॥ ॐ वा स द्
वा य र्क क र्क वि क्क ना रा य र्क र्क ॥
॥ न ना म्म स म्म य र्क य र्क य मि य म्म र्क
कां ॥ अ थ को क र्क थ का न्क वि क्क का
क र्क स र्क न ॥ उ क्क ना सि व ना र्क न क र्क
न ना ग वा द् ना ॥ म्म र्क क र्क द् ना य
का र्क थ ना सि म लि ना ॥ म्म र्क क र्क न
म य र्क र्क न म्म या इ क्क र्क र्क ॥ ल या र्क
न ना य र्क न स र्क य र्क ॥ ॐ म्म य र्क ॥
य ना न र्क य र्क थ न ॥ ॐ य द् द्वा क्क ॥ ॥
मू र्क ल ला ट क्क ॥ ॐ र्क द्वा य क र्क य
न यि वा द्वा ॥ र्क द्वा य वा यि ना ना य
ॐ व द्वा द्वा ॥ ॥ ल ला ट क र्क र्क वि य

आवाथीतलं स्वविद्यं कूमात्रल
 यजिलिनामूर्यायः ॥ ३ ॥ सूर्यम
 दीकृष्ट ॥ कूमात्रल ॥ ॐ उद्गृह्यजान
 वदन् ॥ १ ॥ ॐ विगृह्यजानामदग
 दनीकृष्टीयकृष्टीयवर्णस्योन्न
 ४ ॥ आयाद्यावायुथिवीअननिकृष्ट
 सूर्यमात्माजनतस्तुष्टुयन्त्रः ॥
 ॥ २ ॥ ॐ तच्चकृष्टवहिनयन्त्र

[illegible]

वियरुगयार्तं द्रवतयायामल
न. गुत्रेण ॥ कृमानवद्विजिलिय
य ॥ वयोवायादितन ॥ ॥ ॥

गुत्रस्य अग्निमलुलकायकजव
लाहागजाकाव. गुत्रयाजवदास
सिदावत ॥ ॥ कृगतथियर्कन
गुत्रनवकृमानव ॥ आचार्यते. अष्ट
दशसमिहोर्म ॥ उययमननरुसव
रुन ॥ अनियानाम ॥ उं समरुयान
यस्वाहा ॥ ॥ सवायसर्वा ॥ उं
नरुंरुदि. उरुग्राद्यानर्प ॥ चरुर्ल
म ॥ सकजिहावदाहर्नि ॥ ययवान
दी ॥ वक्रायणीगादिघृणाहर्नि ॥ म
शययणीननिधाय ॥ घृणाहर्नियुक्
॥ ॥ आचार्ययुजन ॥ वीहियाज
जाय ॥ ॥ घृणाहर्निकमनसकलर्क
तिलाहर्नि ॥ मालकात्वा ॥ तिलाह
नियुक् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

गुत्रस्य कृमानवलनाकन ॥ आचार्य
नहाय ॥ ॥ कृमानवसर्वगवार्त ॥
समर्थरुंधाय ॥ गुत्र ॥ वक्रवाय
सीति ॥ कृमानव ॥ रुवानीति ॥ ॥
गुत्र ॥ अथासानकृत्र ॥ कृमा ॥ अ
सानीति ॥ ॥ गुत्र ॥ आचार्यक
मेकृत्र ॥ कृमा ॥ कत्रयानीति ॥ ॥
गुत्र ॥ मादिवासर्क ॥ कृमा ॥ नसयी
मीति ॥ ॥ गुत्र ॥ वार्थयकृति ॥
कृमा ॥ अकामी ॥ ति ॥ ॥ गुत्र

धामिधमाधदि ॥ कृमा ॥ आदधामि
॥ ॥ गुत्र ॥ नित्यस्त्रायीरव ॥ कृमा
॥ वार्त ॥ ॥ गुत्र ॥ गिर्सस्त्रायामन
कृत्र ॥ कृमा ॥ वार्त ॥ ॥ गुत्र ॥ अग्नि
युजनकृत्र ॥ कृमा ॥ वार्त ॥ ॥ गुत्र ॥
॥ मधुर्मासवर्जनकृत्र ॥ कृमा ॥ वार्त ॥ ॥
॥ ॥ गुत्र ॥ अगम्यागमनवर्जनक
त्र ॥ कृमा ॥ वार्त ॥ ॥ गुत्र ॥ रंरुव
र्थकृत्र ॥ कृमा ॥ वार्त ॥ ॥ गुत्र ॥ उ
नरुंरुयर्ककृत्र ॥ कृमा ॥ वार्त ॥ ॥ गु
त्र ॥ ॥ नित्यदुधार्तकृत्र ॥ कृमा ॥ वा
र्त ॥ ॥ गुत्र ॥ ॥ नित्यवदवा ० कृत्र ॥
कृमा ॥ वार्त ॥ ॥ गुत्र ॥ ॥ यावद्वा
यदमासगावद्वर्गवर्तसि ॥ कृमा ॥ वा
र्त ॥ ॥ गुत्र ॥ ॥ कानसधनयदार्थम
नव ॥ ॥ गुत्र ॥ ॥ गुत्रकानउयानग
कृगलित ॥ यदादिवर्जनकृत्र ॥ कृमा
वार्त ॥ ॥ गुत्र ॥ ॥ उच्चावेराहर्न
उच्चाटवार्कवर्जनीय ॥ कृमा ॥ वार्त ॥
॥ ॥ गुत्र ॥ ॥ मात्सर्यादयोवर्जनी
यकृत्र ॥ कृमा ॥ वार्त ॥ ॥ गुत्र ॥ ॥ ग
र्थासयनस्त्रीगमनवर्जनीयकृत्र ॥
कृमा ॥ वार्त ॥ ॥ गुत्र ॥ ॥ अदकादा
नवर्जनीयकृत्र ॥ कृमानव ॥ वार्त ॥
यक्रुयायवितकृमासनसर्वसाचर्कका
सग ॥ गुत्र ॥ ॥ गिगलन ॥ नित्यय ॥ उं
रु ॥ स्वाहा ॥ उं वक्रयज्ञान ॥ उं उव

२४५ यामले ॥ गुरुः ॥ गाद्रवेऽनुत्युमंत्रत्यागा
द्विदिता ॥ गुरुमंत्राग्यागाद्रावन्तर्कवर्त

४ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं विसृ ॥ ॐ ह्र ४ स्वाहा
॥ ॐ नमः ४ गति वाय ॥ यूक्लं वनयु
॥ १० ॥ गायत्री १० ॥ आहूति वन
युक्लं ॥ कुमार ॥ ॥ गुरु वनयु
माहि मुखेन कुमार अंग ॥ धर्म ॥
यथ मयुक्लं ॥ ॥ आचमनं न्यास
कृत्वा ॥ वदु गायत्री न कृत्वा न न्यास
॥ धर्म ॥ ॥ या न्यास ॥ ॐ ह्र ४
प्रचक ॥ ॐ ह्र ४ वृत् ॥ ॐ ह्र ४ क
रक ॥ ॐ ह्र ४ वृत् ॥ गायत्री ना
अर्थ या सादक न सिद्धि ॥ आचार्य
न कुमार नीति कृत्वा ॥ ॐ यथा दया
न अस्माय ह्र ॥ ॥ अस्तु तथा क
र्त्तुं ॥ ददय न नाठन ॥ अस्तु न निव
सि ॥ ॥ याद दय न नाठ कृत्वा न
॥ ॥ निवसि ददियाद र्मा ज्ञान
॥ अस्तु न निवसि युज न ॥ ॥ गत
कुमार न न्यास कृत्वा नायाव क
नृस्य कृत्वा ॥ या न्यास मयुक्लं
द्वि ॥ गाल गयी दिव्य धर्म ॥ अग्नि वि
कार माल र्ग ॥ सुख म्मावर्त्त नो द
वी ज्ञाना न्यास जय न ॥ ॥ याव
यवी ज्ञान दह नं वद्वि वी ज्ञान ॥
प्रावर्त्त न वी ज्ञान वी ज्ञान मृ
कृत्वा ॥ ॥ अथ गायत्री यावता

यज्ञीसदानेकमात्रकृतम् ॥ अथम
 ॥ ॐ ह्र ८ गत्सवि कर्षत्र ८ ॥ द्वितीय ॥
 ॐ ह्र ८ व ८ र ८ ज्ञो देव स्यामी मदी ॥ तृतीय
 ॥ ॐ ह्र ८ व ८ र ८ मिथाया नयया दया
 ॥ चतुर्थ ॥ सावित्री नमो नमः ॥ ७ ग
 ॥ गयणी ८ ॥ ॥ राजन्यस्य नृपस्य
 सावित्री ॥ वैष्णव्या सावित्री ॥ जगती ॥
 सर्वार्थनायणी ॥ ॥ श्रीगौरीदेवी ॥
 ॐ वृत्ततदी कामा प्राप्तिदी कया प्राप्ति
 दक्षिणा ॥ दक्षिणा ॥ दक्षामा प्राप्तिदा
 या सत्यमायान ॥ ॐ मता दू नित्यनि
 द्या ॥ ॥ यद्गमय यथायेकाव
 जव विर्तन यावत्तु न कृत्वा न मरु
 त्रिकर्म यावत् ॥ कालाक्षिदाव
 दाया सिद्धयमल ॥ ३ दकं तात्तिका
 चतुर्दिक् कुरु ॥ सिद्धयर्थनर्थका
 ॥ ॐ अग्निर्वयं यज्ञ ॥ ॥ ॐ मू ८
 मृगव ८ संमा कुरु स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ
 यथा त्वमग्ने ८ मृगव ८ मृगव ८ मृगव ८ मृगव ८
 स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ अवेमा ८ मृगव ८ मृगव ८ मृगव ८
 मृगव ८ संमा कुरु स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ यथा त्व
 मग्ने देवानां यज्ञस्य निषिधा अग्नि
 स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ अवेम रुम नूयानां
 वदस्य निषिधा रूयाम स्वाहा ॥
 ५ ॥ अग्निर्वयं यज्ञ ॥ ॥ कृमान

मनुः॥ भोशंकीर्तियेदंतेः तस्यनामोभिवादने॥ आयु
आनभवेसौम्येति वाचोविप्राभिवादने॥

यालाहागनकालाकिहावसमिध
३३ सदैवाव दधुयवेनदोहा
वसमिधकुवनकोहावद्रससधि
सुगै॥ ॐ अन्तयसमिधमहावेव
हगेजागवदमयथात्वमनेस
मिधसमिधसगवमहमायमा
भधयावजसावेजयायधुसिधु
मवजसेनसमिधजीवयुगाममा
वाथामिधवाहमसाकत्रिकुर्य
सखीनजस्त्रीवमवजसेनाधारु
यासहस्राहा॥ ३॥ ॐ अर्चियय
द॥ ॐ अने४सहव४समाक
प्रसाहमिधयुववगसमिधकुह
याग॥ ॐ अर्चिययुद॥
अथवमवात्रिजद्युगाहमिधका
दिर्क॥ युगाहमिधमनतिलाह
मिधुर्क॥ ॐ युर्कद्विधना॥ ॐ
आवर्कवाक॥ आवमवर्कसा॥
ॐ मलाथसकु आससाहाग॥
ॐ मरुदायस्ययादायश॥ अ
गर्गभादि॥ ॥ वहुतनागोच्चान
र्ग॥ दहावदधुकथिदुहगेअ
जाकर्णयाहनहमन॥ ॐ नाग
स्यनागनाग्येलेलातरकाज

अनित्रसवारुस्यनियेप्रयुवत
माधीदिनसाखवाजिनययुन
लाय॥ ॥ अमकदवसासगमाह
श॥ ॥ अतिवादयामि॥ ॥ ३॥ निख
ननारायणअहंता॥ ॥ अतिवाद
यामि॥ ॥ अथवसर्वका॥ ॥ ३॥ मा
नध्वरी॥ ॥ ३॥ मलिदूमात्र॥ ॥ ३॥
३॥ ययानि॥ ॥ ३॥ धनकुध्वर॥ ॥ ३॥
३॥ अलिमसकलव॥ ॥ ३॥ युधात्रा
ममनाय॥ ॥ ३॥ कृदिकध्वरी॥
॥ ३॥ गृहदवनी॥ ॥ सर्वान्दवान्
गुनृवीन्नागमागुयिगुसर्वस
महवानिवनजदवगारु॥ ३॥ व४
सुअहंता॥ ॥ अतिवादयामि॥ ॥
॥ ॥ अथकासवाहावमयान॥
यगयामरुवसस्य॥ ॥ ३॥ ॐ गनु
या॥ ॥ अतिगन्धि॥ ॥ कृणका
यकावर्कवककुमात्र॥ ॥ ३॥ अय
र्यमदने॥ ॥ लभनाललाट्यी
वायदिकिजवाहमूलद्विनि
लर्ककात्रय॥ ॥ ३॥ अन्त्यागी
वोद॥ ॥ ३॥ अग्निमयियवमान॥
वहुआमागीवोद॥ ॥ ३॥ वगनदी
कामाश्री॥ ॥ ॥ वहुकनरिका

हाद्याहनिनप्रदुतिवियावयकः
साय ॥ वदुआचाययाऊवस
नयावप्रह्नात्रिकर्मयावक ॥ ॐ
अ० ४ सुधवयादि ॥ ॐ सिंहायादा
य ॥ ॐ अ० ४ समिधेति ॥ समिधे ३
दाय ॥ वृद्धवगसिंहायादाय ॥ ॐ
प्रह्नात्रिकर्मधेनकं अ० ४ गंधादि ॥

आचार्यन ॥ यकूमल ॥ सुखादु
ति ॥ दग्गायादि ॥ शक्तिकथोष्टिक
॥ वाङ्मलयुजा ॥ यवधन्यादिवः
लियुजा ॥ नैवेद्यदर्शन ॥ वाङ्मल
अ० ४ सैकत्य ॥ घृणदीयवृत्तिका
चायध्विमादिहर्म ॥ वलिहर्ण
॥ दक्षिणायन ॥ ॥ वृद्धलेयु
र्ध्वार्ण ॥ यविणमाचन ॥ सैवः
यागन ॥ ॐ वृद्धद्वीनियुक्त ॥
ॐ आयायसिनिअर्पसा ॥ ॐ म
कार्थसुखं ॥ ॐ आदि ॥ जाय
मागे ॥ ॐ मृद्वदिनि ॥ ॐ
नमावृद्धले ॥ ॐ कृद्धनृलाक
स्वामीनिखिलजनगुरु ॥ सर्वना
मुयवकानातोयायालककर्त
वकुलपदनादवृद्धावृद्धादी
॥ दहनेककृत्तयनमनिजगुरु

मंगवदाहमूर्तिर्यह्नातामादिथ
वावलनयनवदुर्नयकस्तनमा
मु ॥ अ० ४ लामादिमालकोमाय
॥ अ० ४ गंधादि ॥ ॥ ॥ ॥

वदुनलागोवात्रावृद्धवग ॥ ॥
अ० ४ नालीवृद्ध ॥ आचार्योणावृ
द ॥ वृद्धावृद्धीतविसर्जन ॥ वाव
नजलनातिथक ॥ यद्वनसिद्धन
सुखलागोवृद्ध ॥ यकृद्विसर्जन
ॐ निवृत्तवृद्धविधि ॥ ॥ ॥

वदुलाययकल ॥ वदुतावम्य ॥
वदुर्वसास्यद्विहावदुलकथिला
सखातासलखनस्यजादग ॥ ॥
ॐ माग० ४ साकनसाह्व ॥ नृव
उत्तिकर्मिदहि ॥ तासजागेमामन
ॐ सक्ति ॥ शालासयादलीखव
गगवदुन ॥ ॥ तागलसलख
नयकयायथतागे ॥ लखवृद्धा
वयत्रय ॥ ॐ सत्यसिचनजानन
ननमसि ॥ ॥ वलिविद्य ॥ ॐ वृद्धि
वीखाहा ॥ ॐ वृद्धीनाजायखाहा
॥ ॐ प्रियखाहा ॥ ॐ लक्ष्मीखाहा ॥
ॐ सद्यथादवृद्धाखाहा ॥ ॐ
गव० ४ विवर्ति ॥ ॐ रुयनयखाहा
॥ ॐ वृद्धनयनयखाहा ॥ ॐ रुगा
नयनयखाहा ॥ ॥ अ० ४
यलयमकु ॥ ॐ अ० ४ नयन

प्रातर्ननुयात्स्नानं हामलोपोविगर्हितः॥
अतोमध्याह्नकाले तु स्नानं विलसतश्चरेत्॥ तस्या
सायिकेन संक्षेपेनोत्पमंत्रेण प्रातस्नानव्यमः॥ १६

॥ लंघनहादायकं यलयमनु॥

ॐ अंकुशप्रतिहताय नमः॥ हाया वि
ध्यमूर्तिषु वक्रा विष्णुश्चतुर्द
स्वयं जायति स्थवमद्वात्रत्वमो
क्षप्रत्वमनादित्यं प्रथमकमेम
मृतत्वयं कृष्णायार्थाभिप्रायमृते
मृतस्वाहा॥ ॐ अमृताकरनम
सि॥ नासिय॥ यागनाम॥ ॐ वा
यस्वाहा॥ ॐ अयातायस्वाहा॥ ॐ वा
नायस्वाहा॥ ॐ उदातायस्वाहा॥ ॐ
समानायस्वाहा॥ ॐ त्वयि नमः॥ य
जोमुल्लिखि॥ ॐ अमृतायि नमः
मसि॥ नासिय॥ यथैव तां कृत्वा
॥ नासिय॥ ययकायकं॥ मखगुद्धि
॥ ॐ नित्यं दूहि काविधिः॥ ॥

वानसकालसाकृउदिसदतवद
॥ यूष्वाक्षसंधावलसयाचकमाल
॥ स्थालशकसिचकाव॥ स्नानविधि
धूनकावमध्वानशका॥ संधा॥ अ
क्षत्रिकर्मरिक्तार्क॥ अयनाक्षर
ध्वानक्षत्रिकर्म॥ स्थानाविचक
नमनव॥ स्थानायाथथद॥ ॥

गमावदालं हनविधिः॥ वददिका
विय॥ वदयानित्यस्नानसंधाअ
अक्षत्रिकर्मयाचक॥ ॐ न

कलाहंम ज्यु ४

वाक्य॥ उपनयनाक्रमेण विवर्धनसा
प्रदानचतुर्थदिवसे वेदारंभ आभ्युदयिक

स्नानादित्यकर्मधूनकाव॥ दूव
दयवदकयाय॥ वेदार्नेरमावृण
द्वीत्यदयिकवृद्धिगद्वकाकः॥

॥ नित्यविद्वद्भवात्रिया॥ दं
क्षिसंगत॥ स्वलासंगत॥ नित्ययद्र
संगत॥ डिमतिद्रुसंगत॥ स्वद्रुसंग
व॥ स्वयांगद्रुसंगत॥

ददिकागायणीयदान॥ ॐ नमः
अद्यादियस्यताजनं॥ वक्राअष्ट
कलगतलिग्वृजामुल्लवृद्धि
नाम्नादियुजास्रस्रवदने॥ ॐ

नमः॥ कलगतलिग्वृजामुल्लवृद्धि
शविधिमर्ककलगावर्तनं॥ अथ
यदासादनं॥ ॐ नमः॥

यानामा॥ वृगादल॥ ॐ समद्रुवा
नथस्वाहा॥ नित्यययववात्रव
कादियुगादुर्निदशो॥ ॐ नमः॥
नियुक्तं॥ ॐ नमः॥ दूहि काविधिः॥
दूहि विद्यावमालकात्वायतिला
दूहि युक्तं॥ ॥ ॥ ॥

नमः॥ यथाकर्मकात्रय॥ ॐ नमः॥
यात्राचार्याय स्वयं सस्वमिकस
यी॥ अमृतसमान॥ आयाथनेन्या
सकक्षगिमादितर्लखनहायाव
नयणीतजयलय॥ ॐ नमः॥

व्यास ग्राह्य दृष्ट श्रुत ॥ १०८

वि पूर्वोक्तशकासंख्यायवकेषु

क्लृप्तिकर्मयायक ॥ ॥ अथेतिखा
 वनयायाववृत्त्ययनवृत्ता ॥ खास
 गुदियाकर्मयायकमध्वनर्मध्व
 यायक ॥ धनकावक्तुं लिखावय ॥

श्यामपूजायादाकलनकं संधय
यावद्भवयाअग्निक्लृप्तं ईशना ॥
रुलकहायानगलुने आदियमा
लकार्ग ॥ ॥ ॐ अथादि ॥ ॥ ॐ ॥

कर्मवृत्त्यवर्तननिमित्तार्थवाक्य
॥ एकवक्त्राकलशाश्चर्यं ॥ ॥ कल
छिनत्तमयाय ॥ अनित्यानाम ॥ ७

समूहवानथस्वारो ॥ ॥ घृणाद्
जितिलाद्गिदूर्ध्वं ॥ गतागुन
स्यविदूखवसस्यमिक्सस्यंन ॥ यु
नोयूखवन्कमनजूर्यवासादिक

दुलियर्थनीवगणय ॥ अथ
वदुजयगाद्रसिध्यायार्थक ॥ - ॥

धनादोयमनु०॥ ॐ नमः शिवाय
विष्णवे नमः शिवाय

४॥ ग्रीहद्वान्याददसददधुगिस

दृष्टमिति श्रममिति श्रमसूत्राः॥
मृगस्य सत्यस्य द्रवस्य धनस्य॥

धर्मायद्विधर्मावेद्विधानयः॥३॥
मृतजिह्वस्यजिह्वमृतजिह्वस्य

॥ रात्रौ धानां दधियुतं धर्मकामेन न दधयेत् ॥
अश्रुतो ह्यनिधर्मः स्याद् दद्याद्विधिः प्रोपवीड्यते ॥

अंग ४॥ श्री ह का स ए ना ह का स ४

उबलः सहकासः येति सहकासं
जनमितासं मितासानां

असहस्रसामन्तायकृष्णिन् ॥
५ ॥ स्वतन्त्रांश्चक्षुषीयसाकेय

नमो गुरुभ्यावा। को। लोचन। को
वा। ऊ। वा। ॥ ४ ॥ ॐ नमो देवाधिपते ॥

मन्त्रो नूतनो नाशवन्त्यथेष्टं
वाचिष्मन्मन्त्रो नूतनो नाशवन्

मानवीश्वानूवर्त्मानाहवकु ॥१॥

४ यथादधि । सामस्य नूय ७ रुविष

मिकावाजनमय ॥ ६ ॥ ध्यानना
नृपकवलियरीवायस्यगधमा

४॥ सकृन्मा० नृपयन्त्रयनमूयवाक
४॥ कर्त्तृकस्या॥ ७॥ दधिक्राया॥ १०॥

॥ गन्तादर्वी ॥ ११ ॥ नयणी मययाव
दाय ॥ स्वाहा ३ ॥ ५ ॥ वदून अरु

त्रिकसंयोगो॥ॐ नमो भगवते
विष्णवे॥युद्धवत्सर्व॥

नमस्त्याक्षयादिसर्वयुद्धवने ।
ॐ युष्माद्वीनियुष्मा ॥ मातः

सा ॥ भगवन्महाशक्तिः ॥
॥ कलभगिष्यकैयदनाः ॥

बंक्रिसया २) वलवारिया।

यद्वायाः प्रजापते ॥

वरगुह्याजवसखने ७

शालीर्षदं ॥ यद्गुविमर्जते ॥
 वदताययक ॥ या नृणां गच्छ ॥
 तिलोवणीकर्मविधिः ॥ ॥
 अथ समावर्तनविधिः ॥ वदति ह्य
 स्नानसंध्यं अक्षत्रिकर्मयाचकं ॥
 आचार्यं कादिया नित्यकर्मध
 नकं ॥ यथावदकयायर्थका
 दिन ॥ समावर्तनाय दयिकस्य
 द्विवाक्य ॥ अक्षकलेणमध्यस
 वक्राधनसंकलनलखर्थन ॥
 सादृशं नाहोयन ॥ सउगनन
 लोमसवलिवहिरांगीदिरुल
 कतरुमालका ॥ ॐ अद्यादि
 ॥ यद्यराजते ॥ गुणकलन
 चने ॥ गुणनमस्कारन्यासाद्यया
 यजा ॥ आत्मनोय ॥ ॐ गत्वाया
 मीनिदानोद्यते ॥ विष्णुमयस्य क
 लनयुजा ॥ यथम ॥ ॐ धर्मोय २
 ॥ ॐ ईजगमन ॥ १ ॥ ॐ धर्मोय २ ॥
 ॐ वीर्यविक्र ॥ २ ॥ ॐ सामाय २ ॥
 ॐ वीरावली ॥ ३ ॥ ॐ अद्या २ ॥
 ॐ वेदवली ॥ ४ ॥ ॐ अनिलाय २ ॥
 ॐ विष्णुर्लुकी ॥ ५ ॥ ॐ अनलाय २ ॥
 ॐ दिवादी ॥ ६ ॥ ॐ यद्यमाय २ ॥
 ॐ यनादिव ॥ ७ ॥ ॐ यत्नामाय २ ॥

ॐ विष्णुनाटन ॥ ८ ॥ ॥ मध्य ॥
 ॐ वक्रयज्ञानम ॥ ९ ॥ ॐ अक्षकन्या ॥
 ॐ वक्रयज्ञान ॥ १० ॥ ॐ अक्षकन्या
 साधितवदह ॥ ११ ॥ ॐ अक्षकन्या
 तिलाकयाल ॥ १२ ॥ ॐ अक्षकन्या
 अक्षकन्यावि ॥ १३ ॥ ॥ सउगव
 लिङ्गजावनादिसवयनेयुजा
 ॥ सासयकनकगदि ॥ धूयदीय
 रुलनेयय ॥ ॐ सक्तिनरुदुनि
 वउ ४ सक्ति ॥ ५ ॥ ॐ मनादु नि
 मिष्टा ॥ जायकाय ॥ ॥ ॥
 अथ गुणस्य कामयाय ॥ यववग
 यथा २ विधानेन कलनार्थे ॥
 वदय ० निमलु ४ ॥ ॐ वक्रयज्ञान
 ॥ ॥ गुणकलनास्यामि ॥
 ॥ ॥ वदनास्यामि ॥ ॥ गता
 इथयदासोद्यते ॥ अक्षकन्यासमि
 धर्म ॥ उययमनेन रुलव
 हने ॥ ॥ अनियाताम ॥ ॐ
 यानयस्याह ॥ ॥ मउलाव
 ने ॥ ॥ वेदादुति ॥ गिर्यवाह
 ति ॥ ययवान्नी ॥ यनादुतिमक
 लन ॥ सयवयनीनतिधाय ॥
 यनादुतिमक ॥ तिलादुतिमक
 लनवियकलन ॥ दिमिष्टा ॥

उत्थात वसतु वासिभिरुत्थनं

॥ वदमः ॥ ॐ विमलः ॥ सयमः ॥
 ॐ नमः ॥ प्रदमः ॥ वलियः
 ॥ धर्तव्यवदयादवमलयमलः
 ॥ ॐ गन्ति जहामि ॥ पूर्वमेव इति
 वृत्तः वद प्रकलनया लखतलि
 जलरुणमगयावहायमलः ॥ व
 कायाजवलिधनकायावधया
 जवनधनकः ॥ ॐ आगन्तुमि
 वगृह्णामि ॥ धर्तव्यनहायमलः ॥
 ॐ नमस्तमलिषिचामिलिययम
 वद ॥ वदवदवसाय ॥ १ ॥ लख
 काया ॥ ॐ आगन्तुमिवगृह्णामि
 ॥ लखनहाय ॥ ॐ यनलियमद
 गन्थनाकामयविवर्गयद्याकद
 धिनायमः ॥ २ ॥ वृत्तः लखका
 यमलः ॥ ॐ आगन्तुमिवगृह्णामि
 ॥ लखनहाय ॥ ॐ आगन्तुमिव
 मथाजवदतः ॥ ३ ॥ काया ॥ आगन्तु
 नमिवगृह्णामि ॥ लखनहाय ॥
 ॐ आवः ॥ विवगमानमनस्यराज
 यनरुतः ॥ ४ ॥ गन्तिमोतरी ॥ ४ ॥
 काया ॥ ॐ आगन्तुमिवगृह्णामि
 ॥ लखनहाय ॥ ॐ नमः ॥ पूर्णमा
 मरुतः ॥ अस्य कयायजिन्वथ

यः कुरु सिद्धासनयायी विनैः सः सिद्धिः क
 समादावर्धं सोयकीर्तः ॥ वदुणि
 नत्वेतसाधनं ॥ ॐ ह्रस्व ॥ ॐ वृद्ध
 यः कुरु ॥ ॐ ह्रस्व ॥ ॐ वृद्ध
 दं विष्णु ॥ ॐ ह्रस्व ॥ ॐ वृद्ध
 १११ वाय ॥ ॥ कुरु वरुणा वि
 य ॥ वदु ॥ ॐ यत्रिधाय यमो धाय दी
 र्घ्याय स्वायत्रदक्षिणं १११ नैव जी
 वामि नैव १११ सूनीयो नाय स्वायमति
 संययिष्य ॥ ॥ गविय ॥ ॐ यत्र
 सामायावावृथिवीयनसंदायवृ
 द्धस्य नैव ॥ यत्र गन्धमायनिययत्रा
 ॥ ॥ वतननैव क ॥ ॐ यद्वयक ॥
 ॥ ॥ वतालिविय ॥ ॐ यत्रासवा
 सायत्रिवीनः ॥ १११ सउक्तयोर

वणिजायमानः। गंधात्रासकवयः३
 नयंगीस्वाध्वा मनसाधवयंगः४॥
 ॥ ककुलवियः॥ उं अलीकन
 णमसिहयाः। लंकनः। मसिहया
 सः॥ ॥ सिंधिः॥ उं लंकविष्टः॥
 ॥ सगुणः॥ उं दधिकुयाः॥
 ॥ अदतः॥ उं दीर्घाः॥
 ॥ सगुणः॥ उं याः॥ रुलिनि
 ॥ द्वाकस्वानः॥ उं अस्वानयमद
 निः॥ श्रद्धार्थे कामाययः॥ न्दियाय
 । नमस्तेयनिगृह्णामि यनसाचर
 णनयः॥ ॥ नसाकमालस्वानः॥
 उं अद्यभाषा नमामि न्यस्य काल
 वियलंयुधः। ननसंगथिताः॥ मूम
 नमः॥ अवधामि यः॥ मयिः॥
 अं जलनवलकः॥ उं वृकस्यासीक
 नीनेकः॥ ॥ द्वाकनकनकः॥ उं
 यं जनिवधमन्यवत्रकं यत्रिग
 स्थः॥ ॥ प्राचनं प्राचनादिविः॥
 कृगवियमलुवाः। नानयः॥
 ॥ उं वृहस्यकदित्रसियाः। नाना
 मलुः॥ ॥ निजसायनः। नाना
 द्विः॥ ॥ काथयालवियमलुः॥
 ॥ उं यनिः॥ ॥ विष्टः। नाना
 यदयायत्रिधनं वः॥ ॥
 कलवगवियः॥ उं स्त्रिनिः॥

॥ यत्किञ्चिन्मविद्य ॥ उं विष्णुः ॥
मानाष्टयस्यप्रियादि सर्वतः ॥

॥ ॥ आहूतिविद्य ३ ॥ ७७ ॥

ॐ आहूति ॥ धृतातथिय ॥ ॥

ॐ मनाहूतिप्रतिष्ठापय ॥ ॥

मामयाकं अह्नाकायावसेवा

यादाव ॥ लामाह्नागाडाकरु

लकं कवेलेन कायपालक वि

दावकनकं धृदवतावदभा

कनवन ॥ ॥ धृथयाथयगा ॥

अधवायन ॥ विद्यया ॥ नगंदा

वह ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

गुरोरनुज्ञामधिगम्यमातः व्रते
स्थितो हं व्रतभंगविघ्नः ॥ प्रणम्य
मया दाम्बुजयुग्ममेकं गच्छ
मिदेशात्तरमाज्ञयाते ॥ भो मात
देशात्तरंगच्छामि ॥

1658

HUNT

ABH

ADAM

धीवता यथादिनयाग
 पूजुलीक आसि
 धेऊ मिथकादि
 कल्पु मिथाथकादि
 नमल मिथानाका
 मरु आनाग
 कग येतु नाव
 नरु नउ
 वरु कसित धीलकी
 यकपीयक दामम
 नागध रुधिस
 यिताय कंठु यितायक
 एव लकि जाथट गवा
 एक सुधाग
 विनमार्थ समकायना
 क॥

विमलमय नमः

बो १४ दक्षिणां देवो॥ बो १५ ज्ञोहित॥ बो १६ ज्ञोसियात॥ बो १७ आचार॥ कुस्माव॥ नउ॥ नेस्सं
 बो १८ ज्ञाकिं तेष्वर्थे॥ निआवंथ्वर्थे॥ नउ॥ कुस्मालयातदक्षिणमुम्बाल॥
 नयानकालसो बो ४ जुल॥

मासघेडेयाचनेयावेर॥ उं आरा
 मन्त्रमशमानमरेमवत्त६० स्थि
 भवा॥ अभितिष्ट पुतं न्यातेववा
 धस्वपुतनायत॥ २॥

चतुष्टयादि ॥ वक्रिनायगी ॥ ॐ द
वकुलसीतमावयति ॥ वा ॥ ॥ ॥
ति ॥ मगदुर्गि ॥ यतु ॥ ॥ ॥
वधन्यादिवलिसन ॥ मंगवद्य
नयागत ॥ उयस्यगति ॥ दक्षिण
दात ॥ वाचन ॥ ॐ सुप्रिययान
ति ॥ यगीनातिथकयविगुण ॥ ॐ
अथाग्रयान्वयगि ॥ वक्र ॥ ॥ ॥
यार् ॥ उवसवाक्र ॥ यानधवक
आतर्कगयावयुक्त ॥ ॐ दवान
कुविदा ॥ ॐ आयायस्य ॥ ॐ
वर्हिर्नगा ॥ सर्वानेव ॥ नेशद
यान ॥ आर्षसा ॥ ॐ मन्त्राथोमं
॥ जायस्यार् ॥ ॐ मन्त्रवदति ॥ अ
गुर्ग्यादि ॥ ॥ दवकल ॥ ॥ ॥
योगीर्वादि ॥ वक्रायुगीनविमर्क
न ॥ वक्रावृत्तमाचन ॥ गत्य ॥
नयुगीनातिथक ॥ वक्राकाष्ठ
यंरुद्रया ॥ ॐ गन्या ॥ मसि ॥ ॐ
प्रायुर्व ॥ अग्निप्रकाव ॥ मानवा
वियनेत्रा ॥ यक्रयाववक्रवद ॥
ॐ रक्रावृत्तमि ॥ निर्मकृत् ॥ ॐ
अधवाचति ॥ वलिसन ॥ वक्र
कलगातिथक ॥ यदतर्हिदुनस
उत्तमीर्वादि ॥ मरुत्प्राविष्यति
हा ॥ ॥ वलिर्ज्जावतादिका

य ॥ यक्रविमर्कन ॥ ॥ ॥ ॥
न्यासाद्ययगा ॥ ॥ ॥ ॥
यसादिथाय ॥ वाक्र ॥ ॥ ॥
॥ ॐ गिसमावर्कनविधि ॥ ॥
यक्रगासूयसायमनव ॥ यक्र
क्रुर्थमान ॥ ॥ ॥ ॥
वद ॥ नयायावकागद ॥ कागल
सलंखनयावयुजायादाव ॥ व
दुनसूयार्द्ययावकं ॥ ॐ
अथवालाह ॥ ॐ अयादि ॥ ॐ
अथवालाह ॥ ॐ अयादि ॥ ॐ
मित्रमिददि ॥ सूर्यस्यावृत्तम
वावर्क ॥ काग ॥ अगुर्ग्यादि ॥ ग
जलेरतिथकं ॥ ॥ ॥
वाक्रावृत्तमाचन ॥ ॥ ॥
अथवालाह ॥ ॥ ॥ ॥
का ॥ ॥ ॥ ॥
नाययुजा ॥ दयत्रियुजाकायवा
कानदयक ॥ काग ॥ ॥ ॥
निनि ॥ सगवृत्तका ॥ ॥ ॥
अग्निनि ॥ ॥ ॥ ॥
मला ॥ ॥ ॥ ॥
मिस ॥ नागश्वा ॥ ॥ ॥
मिधुनमारुती ॥ ॥ ॥

समयतनाय नक वासनाया
 लाञ्छनकर्तृक ॥ ॥ ॥
 गव्यविधि संयुक्त ॥ ॥ ॥

अथ विवाहाविधि विस्तरात् ॥ नक
 सेवा पूजायावका नवका कुरु
 के कुरु नयाक ॥ दादनके
 वागनरदयके यवदकयाय ॥
 एकविंशतियुक्त विवाहदल
 तिदिन ॥ शिराएवगादलालया
 सज्जुकाय ॥ यजमानाम्
 कस्याविवाहादगया यदयिक
 वृद्धिगादवाक ॥ यिनायपूजा
 ॥ यि० पूजा ॥ क्रिकर्तृनाम
 कायमान ॥ यद्वक् दूवकाय
 अष्टकलगलीसा र्दकाय ॥ मा
 लकावाचके ॥ नागद्ययकयक
 नीलीलक्ष्मीमनावआदिन ॥ ॥

अथ दत्तनवक्रया ॥ यिदिसिआ
 वाग्यादिगर्थकादि नकि निर्द
 २ दंतुलिनिभर्तृमानकासि
 लक्ष्मियाय ॥ स्नातादिनियक्रम
 धूनेक ॥ थंकादिस्यवाचकया
 य ॥ यिनायतिमनुनकाय ॥ वा
 पूजा कायप्रतिनिष्ठयकयार्त

॥ वक्रणीवायकुरुवर्तवर्द
 सनकगकोर्दगवर्दकासति ॥
 ॥ अथप्राचागस्यैर्दसकर्म
 याचके ॥ वासनायायविष्णुपीवा
 यालितवृंदकायुजायाय ॥ यथा
 विधिन ॥ जायमाण ॥ ॥ थंकादि
 स्यान्नालनालामालावस्वसि कस
 स्वन ॥ निर्मिदुनवलि ॥ ॥ केन
 लोमस्वानकमनककाय ॥ मठरु
 गाठयमुठलगतवृंदकानद्राय
 ॥ लगतवृंदकावाच ॥ वक्रुतिवाया
 केवाचककाय ॥ ॥ वासनाय
 जादाकेपान ॥ वाचनकलनासिब
 के ॥ चवनसिदुनसुठलगावोद
 सुठंय ॥ यथियुतिष्टा ॥ ॥ मास
 उयावकावक्रुवितस्वसिकसर्व
 नलामालयदाव ॥ कोभायीपूजा
 याया कसवियचयनधियकाव
 ॥ लगतवृंदकाकातायनक्रम ॥ ना
 वाचनतव रुनठितनवक्रिचका
 थगायवाल आदिन ॥ आदेलव
 नठुठयवक्रजतीमदनसुथ ॥ याति
 वागीवमकामि युगलाजोसमकर्त
 ॥ ईसनलासकनकर्त ॥ थनद
 सनयाविधि ॥ ॥

संक्रियागमनादियति तथकमा
 ल ॥ वक्राजसकललतागयक
 यकपीलीलक्रीसमुदावलि
 उजा ॥ गमसवद्विद्यार्गमादिमा
 लकारुलकतत ॥ ॥ थकादिया
 आदिनित्यकर्मयुतक ॥ यिना
 यकायमर्लक्री २ गय २ गमाल
 ॥ अतिनिर्धयथथदुमाल ॥
 रुगिनिर्धयर्गलीमास्यकायन
 मगीयकदंकायमाल ॥ यिनाय
 काठकृविर्तथाययग ॥ ॥ यु
 र्वीचिससैकातवनमाल ॥ ॥
 थकादिस्योदकयाय ॥ आ
 यार्थस्यवक्राचनयाकावयथ
 न ॥ थव २ थयकाययकयक
 पीकायनागर्गय ॥ पीलक्रीई
 विस्तरुन ॥ ॥ ॥
 अथ ॥ कायविधि ॥ यरूम
 ययार्थकलिसस्यसि कसलासा
 ललीखधालथस्यरुयावसुन ॥
 ॥ ॥ निर्मकन ॥ उरकाहन ॥
 वलि ॥ उअधवायमि ॥ लखन
 हाय ॥ उअसि नरुदा ॥ वक्रा
 दिखानकतनकवाकृगया
 काययथकयनक ॥ ॥

मठरुंगालयासमुदावलि चद
 मठललानंदाय ॥ साकायो ॥ उंका
 दातुकादोग ॥ मूद्रादियादार्कसल
 य ॥ यादादिमूद्राकसुष्टि ॥ मूद्रा
 दियार्कसिनि ॥ ॥ थथकोल
 ग ॥ उंदीर्घायुस्त्रा ॥ ३ ॥ यदन
 सिद्धनसमुदागावोद ॥ मठरुंग
 नथिपतिष्ठा ॥ ॥ मासधउया
 चकावलासालयंठावकृविर्न
 र्मवायक ॥ नवयुजायाठावठ
 लसियावकवदमठलदकि ॥
 विस्तर ॥ माठरुयक ॥ जाताकल
 अतवमुततिथक ॥ ॥ थन
 वासंकासकायविधि ॥ ॥
 अथ ॥ वक्राचनयाकावयथविधि ॥
 कृविर्तकलगाय ॥ गतवयिच
 उअअकलगा ॥ समुदावलि
 गयउजा ॥ गमसकलककायान
 मालकतयायग ॥ रुगिनिर्धय
 दयिगिनिर्धयवृदकावदमठ
 लथगवाय ॥ ॥ यथाविधि
 कलगाचनयायजायकागर्ग
 ॥ ॥ थकादिस्यविद्वतिवाला
 मालावस्यसि कसग ॥ निर्म
 कनवलि ॥ लखनहाय ॥ ॥

वृक्षनी वायापूर्वाचणुसमुदावलि
 नेमुम्बाल ॥

कलगादिस्नानगतक॥ स्नागयथ
 न जगर्गभादि॥ मठरुंगा
 लवासुगुगु कालिमिचलम
 गुलादिनलाय॥ साकाय॥ रु
 वयाथे॥ अष्टकलगतस्ना
 नयाचक॥ उंरुंजगतिरु॥ न
 उद्युजायाहावचलमगुलदकि
 धासकविचलसिदनक॥ म
 वलरुवनमालदुयक॥ व
 नतोदिष्ठागीर्वाद॥ सरुंजगति
 थियनिष्ठा॥ मासधरुयाव
 कांरुविनेमवायक॥ माउरुगि
 रुयक॥ अरुयमननियक॥
 थकलैथैथेताथेवमूनीवार्मि
 हूँकाधनकायरुगितिकायरु
 ययाग॥ थगवमूनिवासकय
 अथवागुगवारुगितिकायवि
 विष्ठा॥ संधादिधनकाव॥ थकादि
 संधागुगवालासातावयरु
 मगुययाथाकलिसर्वसाचक
 स्नि॥ निर्मकनवलिअग्निता
 रुतकासुगुगसदकाय॥ नाजा
 याइरुगोमनकविलंदकवि
 म॥ मालथनद्वाय॥ थलरुग
 विच॥ उंवसायविममि॥

॥ यमादयिठिनिगवावस
 रुविनिवात॥ गतवृदकागस्ये
 दाय॥ उंस्वकिनामिमीता॥
 रुविनिका॥ उंगामममिन्द॥
 गतवृदका॥ उंसरुमाजिस॥
 गताववाग॥ उंयुजायने॥
 लयता॥ उंदिनयगकसमवर्क॥
 ॥ थकूतलाकसइरुताम
 ननायागयदनामकय॥ उं
 वृंदविष्ठा॥ स्नानविच॥
 र्चदनाडागीर्वाद॥ वादावन
 कय॥ अग्निनीतद्वाय॥ उंन
 म॥ गमवुवाय॥ हासान॥ उंन
 ववाय॥ ॥ सरुंजगतिथिय
 निष्ठा॥ मासधरुयावकावला
 सालरुंदावतायवडिवसु
 लधनिवनक॥ वागुगवा॥
 वयकलैककाय॥ गतवृद
 कारुविनिकातायावगतावस
 ग॥ थगवागुगवारुगितिका॥
 अथयिठिसिद्धासिद्धनव
 का॥ याचक॥ थकादिमि॥
 अमकस्यवधूसिद्धतागारु

जाम्बीरं निलुभं च उडपीतं
वाडके ॥ लवणं मद्यं कोरं जादुवं

धनं क्रमेण तु ॥

ननिमित्तार्थं वाक्यं ॥ उभयादि ॥ व
याताजनसमर्थं ॥ ॥ दवक
यथाविधानं कलगाचनं ॥ चंद
मण्डलसंघातं चंदनयूजा ॥ वि
ठिनिसनवगुण ॥ ॥ कलगा
याखवसु, सगुणयादवन, निदि
विद्रुमूद्वे, गालसिंधुमूद, विद्रु
अंगुठियातकाठनवासनकंयूज
नं ॥ ॥ कलगायाजवसु, सगु
णसु, सिंदूरिमात्रसाधमूद, गव
धदसिंधुमूद, पादअंगुलिमिंदू
त्रिकायलनवासनकंदवदलंद
लंयत, वंकिपूजनं ॥ ॥ गल
वलि वरिदीर्गमादियूजा ॥ धूय
दीयजायकाग ॥ ॥ वाद्रुणा
दियूजा ॥ अनेसकल्यायावाक्य
यायमगव ॥ ॥ वाद्रु, (ननगा
निकंय ॥ ॥ ॥

कंन्याथकादिनिर्मुलासालावसु
लिकसखन ॥ निर्मेकन ॥ वलि ॥
॥ ॥ खानगन्नकंमण्डलकोणय
यर्क ॥ ॥ मटरुं गालचोनिदि
सात्रगयासगुणनद्राय ॥ निदि
सात्रखववाहनसयासकाय ॥
विद्रुमूदनद्राय ॥ यागकूठन

गालावलिगिन ॥ विद्रुअंगुलिवि
य ॥ सिंधुकायथकादिमं ॥ चन्दन
सिंधुसगुणानीर्वाद्युनिद्रा ॥
॥ ॥ धनतयंसाकावलासा
लावसुलिकसखनवाक ॥ मटरुं
गालचोनिद्रिमात्रगयासगुणन
द्राय ॥ सिंदूरिमात्रजववाहनस
यासकाय ॥ सिंदूरिकायलनगा
लावलिगिन ॥ पादअंगुलिविय
॥ पादमूदनव, गालसिंधुमूदन
द्राकावसिंधुकायथकादिन ॥
सगुणानीर्वाद्युनिद्रा ॥ ॥

वंकिविय ॥ यद्रुलिगायकाय ॥
॥ ॥ दक्षिणादोर्न ॥ गवयमाल
वत ॥ राकं, गायत्रिय ॥ कलगा
थकं चंदनादिसगुणानीर्वाद्यु
मटरुं आत्रथियुनिद्रा ॥ दंर्यायि
दिक्काय ॥ कलगासगुणविठिनि
द्राय ॥ चंदमण्डलसंघादसिंधु
विय ॥ मासधयावकावलासा
लावयन्नकागळूरिथयस
॥ धनसिंधुकाययाविधि ॥ ॥

अथवसु, निवाचकागळूरिया
यथायद्रुय, गुकालयाका
लगयाकावनसुलिकसखन

निर्मकृतवलि । मगरुं गालवास
 सुदयसादयिठिनिरुलितिनग
 वृदकागमावदाय ॥ ~~रुनिनि~~
~~काय~~ । गनवृदकालं यगनचक
 गतावविय ॥ ~~प्रतिषकचद~~
 नाद्यालीद्याद । वदावनकय ॥ ~~म~~
~~रुं~~ ~~जान~~ ~~धियु~~ ~~निजाना~~ ~~स~~ ~~य~~ ~~य~~ ~~य~~
 कावलासालावकुविनस्वस्तिक
 ससादावनायवजिसुगुलधेतिन
 कवस्त्रनिया । रुलितिनगवृदका
 कागायावर्ग ॥ ~~रुनिनि~~ ~~निया~~ ~~रु~~
 गिनिकाययाविधि ॥ ॥

गनः कन्यादानं । आदोजामागाम
 कृतविधि ॥ ~~स~~ ~~य~~ ~~न~~ ~~ग~~ । ~~उं~~ ~~म~~ ~~या~~ ~~दि~~ ।
 यही कन्यादानजामागामकृतम
 ललाजितवाय ॥ ~~उं~~ ~~म~~ ~~या~~ ~~दि~~ । ~~य~~
~~का~~ ~~ज~~ ~~न~~ । ~~उं~~ ~~म~~ ~~या~~ ~~दि~~ । ~~य~~
~~म~~ ~~ति~~ ॥ ~~उं~~ ~~म~~ ~~या~~ ~~दि~~ । ~~य~~
 याययुजायुक्तयुजा ॥ ~~उं~~ ~~म~~ ~~या~~ ~~दि~~ ।
 गविष्मसूक्तयुक्तमासर्ग ॥ ~~य~~
 र्ग ॥ ~~म~~ ~~या~~ ~~दि~~ । ~~य~~
 यचदनयकायवीगययवधु
 यतश्चयदी ॥ ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ ॥
 जामागाममल्लकारय ॥

यथाकर्तृहीनो ॥ ~~उं~~ ~~म~~ ~~या~~ ~~दि~~ ।
 नवर्कलकनादियामलावला ॥
 मदासुयु रिगायुधीनयाकाय
 रुकमेस ॥ मधुकेटरमदनयुनि
 र्गियरगीगली । गदायसमनाभय
 सिंयामिर्गधवात्रि ॥ ~~न~~ ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ ।
~~न~~ ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ ॥ ~~उं~~ ~~म~~ ~~या~~ ~~दि~~ ।
 थिदीयनर्गधवात्रिसुलयिगा । यु
 र्वजन्मवृर्गियायंद ॥ ~~क~~ ~~न~~ ~~स~~ ~~व~~ ~~ग~~ ~~त~~
 वग ॥ युर्वजन्माजिर्गियायमिर्गज
 ननियत्वेर्ग । यत्वेर्गकर्मसुगुल
 जन्मजन्माकनयव । कनयवृद्धिलि
 वद्धायामयित्वकचगसा । ~~अ~~ ~~र~~ ~~व~~
 लमल्ललावृर्गिजामागामविद्व
 न्या ॥ ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ । ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ ।
 गविधिधकल । गत्वेर्गकन्यानाद
 वरकंठलिवसर्वदा ॥ ~~र~~ ~~क~~ ~~न~~ ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ ।
 नन ॥ ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ । ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ ।
 ॥ ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ । ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ ।
 यादि ॥ ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ । ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ ।
 मक्षस ॥ ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ । ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ ।
 ॥ ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ । ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ ।
 स ॥ ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ । ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ ।
 नम ॥ ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ । ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ ।
 यतम ॥ ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ । ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ ।
 यतम ॥ ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ । ~~य~~ ~~का~~ ~~दि~~ ।

यवनमः॥ॐ वरायनमः॥ॐ न
नायनमः॥ॐ अथमनमः॥ॐ उ
द्यनमः॥१०॥ ~~॥ दधनमः॥~~
ॐ जयार्थनमः॥ॐ विजयार्थन
मः॥ॐ अजिगार्थनमः॥ॐ अयरा
जिगार्थनमः॥ॐ जंतनमः॥
ॐ मन्त्रनमः॥ॐ मोहनमः॥
॥ॐ आकषेणनमः॥ॐ धन
धः॥ॐ सधाजागायः॥ॐ वामदवा
यः॥ॐ अधारायः॥ॐ गत्यत्रा
यः॥ॐ वीणायायः॥ॐ धन
दः॥ॐ वक्रवः॥ॐ विव्रवः॥ॐ
प्रदायः॥ॐ गजयत्रायः॥ॐ मु
त्रायः॥ॐ कण्ठालायः॥ॐ आ
धनकयः॥ॐ अतकासना
यः॥ॐ कंदायः॥ॐ नागायः॥
ॐ यद्रायः॥ॐ यगायः॥ॐ क
नगायः॥ॐ कर्णिकार्यः॥ॐ अ
ष्टदायः॥ॐ अश्वेदायः॥ॐ सा
मवदायः॥ॐ अथर्वदायः॥
ॐ अग्निमल्लायः॥ॐ सूर्यम
ल्लायः॥ॐ साममल्लायः॥
ॐ जामातासल्लायः॥ॐ हृद
यायः॥ॐ निरसेयः॥ॐ निरवा
येयः॥ॐ कवचायः॥ॐ नगाय

॥ॐ अक्रायः॥ॐ अग्न्यादि॥॥
ॐ जामातमल्लायः॥ॐ वदनच
क्रायदीनयचक्रायदीनयचक्र
गादीनयचक्रायदीनयचक्र
यादीनयचक्रायदीनयचक्र॥ॐ
मल्लायनमः॥ॐ सर्वतलाधि
यायच॥ॐ उवः॥ॐ उवः॥ॐ उवः॥
मल्लायनमः॥ॐ अग्न्यादि॥
ॐ नगवक्रायदीनयचक्र॥ॐ
ॐ नमोजाना॥ॐ सर्वदवमय
ल्लहिसिद्धगंधर्वकिन्नराः॥ॐ
यालाकयालायजयायायचक्र
चक्राः॥ॐ सधाजागादियचक्रवः
क्रविक्रमः॥ॐ जामागविक्र
वृथासिसामोर्कनलमल्ल॥ॐ उ
वः॥ॐ उवः॥ॐ उवः॥ॐ उवः॥
ॐ उवः॥ॐ उवः॥ॐ उवः॥ॐ उवः॥
माजामातदेवर्ग॥ॐ अग्न्यादि॥
ॐ नगवक्रायदीनयचक्र॥ॐ
ॐ यदि त्वयगितानस्यादण
दायविवर्जितः॥ॐ उर्यकन्याय
दास्यामिदवान्निगुनसुनिधि
॥ॐ जामाता॥ॐ यदि कन्या
गुणायगादणदायविवर्जिता

॥ ॥ जानाता ॥ ॐ अर्चय ॥ ॥ स
सुप्रसन्नविदुषः सर्वं गृहीत्वा ॥ ॐ वि
दुषः ३ विदुषः ४ यतिगृह्णतां ॥ ॥
जानाता ॥ ॐ विदुषः यतिगृह्णामि
॥ ॐ त्रिधा सिं समाना मयनामि
वसुधैः ॥ ॐ मम महिति विदुषामिथा
माके अरिदासति ॥ ॐ जानातां
यननवावासातनं ॥ ॥ ससुप्रसन्न
अर्चयानवावासातनं ॥ ॐ वाद्यं ३ वाद्यं
यतिगृह्णतां ॥ ॥ जानाता ॥ ॐ या
अयतिगृह्णामि ॥ ॥ तनयादयका
लयतिमकु ॥ ॐ विराजादाहसि
विराजादाहमसीय ॥ मयियाशा
थे विराजादाह ॥ ३ ॥ जानातां
धीनावावासातनं ॥ ॥ ससुप्रसन्न
नअर्चयमकु ॥ ॐ अर्चय ३ अर्चय ४ य
तिगृह्णतां ॥ ॥ जानाता ॥ ॐ अ
र्चयतिगृह्णामि ॥ ॐ आयक्य ६
प्रांतिः ४ सर्वान् कामान्नवाप्रवृत्ति
॥ तस्यमकु ॥ ॐ मोनिधाय ॥ ॐ स
मेदय ४ यतिना विदुषः ॥ ॐ यतिमधि
गकु मि ॥ अत्रिषा स्माकं वीरामा
यराभयिमत्यय ॥ ३ ॥ ॥ स
सुप्रसन्न ॥ ॐ आचमनीयमाचम

नीयमाचमनीयमाचमनीययति
गृह्णतां ॥ ॥ जानाता ॥ ॐ आचम
नीययतिगृह्णामि ॥ ॐ आमागमा
स्यताम ४ सुप्रसन्न ॥ ॥ तमाक
यिथैयजानामधियतिथिगृह्णताव
विदुषः नृतां ॥ ३ ॥ ॐ यस्य गतिः ॥
॥ ॥ ससुप्रसन्न ॥ ॐ अर्चय ३ अर्चय ४ यति
गृह्णतां ॥ ॥ जानाता ॥ ॐ मधूय
र्चयतिगृह्णामि ॥ ॥ जानाता ॥ मधूय
र्चयतिगृह्णामि ॥ ॐ मिगृह्णताव ४
यासमीक ॥ ॥ तनधूयर्चयतिगृह्ण
मि ॥ ॥ ॐ जानाता ॥ ॐ
दवस्यतामविदुषः ४ यनवधिनावा
इत्यां ॥ ॐ अर्चय ४ अर्चय ४ यतिगृह्ण
॥ ॥ ॐ जानाता ॥ ॐ अर्चय ३ अर्चय ४ य
तिगृह्णतां ॥ ॥ जानाता ॥ ॐ अ
र्चयतिगृह्णामि ॥ ॐ आयक्य ६
प्रांतिः ४ सर्वान् कामान्नवाप्रवृत्ति
॥ तस्यमकु ॥ ॐ मोनिधाय ॥ ॐ स
मेदय ४ यतिना विदुषः ॥ ॐ यतिमधि
गकु मि ॥ अत्रिषा स्माकं वीरामा
यराभयिमत्यय ॥ ३ ॥ ॥ स
सुप्रसन्न ॥ ॐ आचमनीयमाचम

नाजनिता (१) अथाय कथार्थम
 गम्या गमनमरु काडमत्यनिग
 हादिदायायार्थस्यार्थस्यार्थस्य
 मोहयतीत्यनलुयमहैस्य
 दद ॥ ~~ॐ मित्राणां~~ (००) ॥
 जाना ॥ ॐ स्वस्तिरियमिव च
 न ॥ ॥ स ॥ ॐ श्रीस्त्वादि
 दानि ॥ ॥ जाना ॥ ॐ यथिवी
 त्वयि मि गृह्णामि ॥ ॥ जाना ॥
~~वदेन्वा गृहीत्वा कन्या या जाना~~
~~ददावय (००) ॥~~ धीकात्रिना को न उ
 ल्धाल इ इ धी न कृत्वा ॥ ॥ ॐ अ
 नथत्वा मर्त्य वर (॥ ददातु सामृ
 गत्व मसीया यद्गुथि मथाम
 र्क्युति गृहीतुं नृदायत्वा मर्त्य व
 र (॥ ददातु सामृ गत्व मसीय ४
 या ॥ ददातु यद्गुथि मथाम र्क्युति गृ
 हीतुं वृहस्य गथत्वा मर्त्य वर (॥
 ददातु सामृ गत्व मसीय ४ त्वयि
 यद्गुथि मथाम र्क्युति गृहीतुं यमा
 यत्वा मर्त्य वर (॥ ददातु सामृ ग
 त्व मसीय ददातु द्वि मथाम र्क्यु
 ति गृहीतुं ॥ ॥ ॐ सहि नृययु
 श्य नथत्वा मर्त्य वर (॥ ददातु

त्वयि नथत्वा मर्त्य वर (॥ ददातु सामृ गत्व
 मसीया यद्गुथि मथाम र्क्युति
 गृहीतुं ॥ अथ गंयत्ति नृदायत्वा
 मर्त्य वर (॥ ददातु नृदायत्वा म
 र्त्य वर (॥ ददातु सामृ गत्व मसीय
 ददातु द्वि मथाम र्क्युति गृहीतुं ॥
 अथ वा स ४ यत्ति वृहस्य गथत्वा
 मर्त्य वर (॥ ददातु वृहस्य गथय
 गंयत्वा मर्त्य वर (॥ ददातु सामृ गत्व मसीय
 त्वयि यद्गुथि मथाम र्क्युति गृही
 तुं ॥ अथ स ४ यत्ति यमायत्वा म
 र्क्युति वर (॥ ददातु यमायत्वा म
 र्क्युति वर (॥ ददातु सामृ गत्व मसीय
 ददातु द्वि मथाम र्क्युति गृहीतुं यत्वा
 ययय नृददाति ॥ नृददातु नृददा
 ॥ ॥ जाना ॥ ॐ कादा कृत्वा द
 ॥ ॐ अथ ददन्त ददाति कामे नृव
 गददाति दं मथाम र्क्युति नृददा
 त्वयि कादा कृत्वा ददात्वा कामे ददात्वा
 माया ददात्वा कामे ददात्वा म ४ यत्ति
 हीर्ग कामे नृव ४ नृददातु यत्वा
 तिदि सति ददात्वा नृददातु यत्वा
 दि सति ददं जानं वना ४ सति (॥ स
 दिद्यमाना ४ ४ ४ ४ यसी वती

निदधति सुप्रियस्तमनश्च जा ॥ १ ॥
 मादद नंधर्वाय नंधर्वादिदुदयनयन
 त्यवयगांश्च ददति सुप्रियस्तमनश्च
 मां ॥ मातः ॥ दृष्टानिवतमामेवमातः
 रुद्रसती निरुत ॥ यस्यानूचनः ॥ युद्धा
 म ॥ यययत्यामूकामावरुवातिवि
 शु ॥ सावधूतिरीकगामिति विरु ॥
 पुत्रः ॥ ॥ जानावधूतिरीकगामिति विरु ॥
 दृष्टानिवतमामेवमातः ॥ मातः ॥
 यधूतानामा ॥ निधाय ॥ ॥ तमा
 वासुधयुजादिति मादतं ॥ य ॥ तमा
 नीर्वाय ॥ वृत्तिकत्याजानविधिः ॥
 तमासीत्सथावदुर्वीधनादिभनमृ
 दकावगांश्चानेकमनमलायाश्च
 तिवकयरीतं ॥ जयावरुदिनिमु
 लिधायरुहः ॥ ॥

गम जामाणि न वृत्तानि कर्मद यो ०
 ॥ मद्रदा द्रुपदं न वयं जानकाव
 मोनया द्रुपदाकायनं ॥ ऊरुव
 द्राशान प्रमिदं लयादकिदास
 दलप्रीति ॥ ॥ पुनर्न ॥ उं वृत्त
 यज्ञानं ॥ ॥ सुधीनपुनर्न ॥ उं वृत्त
 विष्णु ॥ अग्नि ॥ उं नमो नीलपी ॥
 उ कमानि विष्णु ॥ अग्निस्तन ॥

रुनियाकायायक ॥ ॥ यथाश्चि
विमर्गवद्वान् ॥ ॥ अर्थयदासा
दत्तं ॥ ॥ अन्निवाताम् ॥ ॥ उंथाऊ
कामयथाहा ॥ सकळिदायववा
वृषाकर्मनाहृष्टदाम् ॥ ॥

[illegible]

वेदादाङ्गानामुपनिषदोपनिषदो

[illegible]

ॐ विष्णोऽष्टाहा ॥ ॐ दैवित्ये ॥
 ॐ आक टं व स्वाहा ॥ ॐ दमाक त्ये ॥
 ॐ आकूनिष्ठस्वाहा ॥ ॐ दमाकूनि ॥
 ॐ विष्णोर्गं व स्वाहा ॥ ॐ दैवित्स्नागा ॥
 ॐ विष्णोतिष्ठस्वाहा ॥ ॐ दैवित्स्नात्ये ॥
 ॐ मनश्च स्वाहा ॥ ॐ दैमनस ॥
 ॐ सकृनीत्यः स्वाहा ॥ ॐ दैसकृनीत्य
 ॐ दर्गश्च स्वाहा ॥ ॐ दैदर्ग ॥
 ॐ यूर्णमासाय स्वाहा ॥ ॐ दैयूर्णमासा
 य ॥ ॐ वृहर्गश्च स्वाहा ॥ ॐ दैवृहर्ग ॥
 ॐ र्थं तत्राय स्वाहा ॥ ॐ दैर्थं तत्राय ॥
 ॐ यजायति ऊया त्रिदाय वृक्षः ॥ या
 यकूदूगः ॥ यृगता ऊय वृक्षस्ये विष्ण
 ॥ समनमक सर्वाः ॥ ॐ गः ॥ स० रुद्या
 वस्व स्वाहा ॥ ॐ दैयजायतय ऊया
 त्रिदाय र्या गः ॥
 ॐ अग्निर्हृगानाम धियनिः ॥ समाव
 त्यस्मिं वृक्षे धस्मिन् रुग स्या मागिष्ठ
 स्या यत्राध्याया मस्मिं कर्म यथा दिव
 रुत्या ॥ स्वाहा ॥ ॐ दमग्निर्हृगानाम
 धियनय ॥ ॐ ॐ रुद्या ऊह्यानाम
 धियनिः ॥ ॐ रुमिद्या ऊह्यानाम धिय
 नय ॥ ॐ यमयुधिया नाम धिय
 निः ॥ ॐ दैयमाययुधिया नाम धि

आनिधेययथाययग । यदस्यामि
हिदिविजार्गयसंनदस्मात्तुवि
नैधिविग ० स्वाहा ॥ ~~ॐ नमो नय~~
~~नास्तिधाय ॥~~ ॥

ॐ नमो नय ० यमिसन्नगहिष्ठा नि
काधेयजत्रदीप्राय ॥ अथकुमु
नमृगममआगद्वेवसगानाअनय
कृष्णकुनः स्वाहा ॥ ~~ॐ नमो नय~~
॥ उदकस्यर्गनै ॥ ॐ यत्रमृ
थाअनयत्रहियकायसंअन्य
ॐ नमो नय ० यानाम् । यद्वाअनै
यानैववमीमिमानः ० यजा ० त्री
मियाभानवीनान्स्वाहा ॥ ~~ॐ नमो~~
यववेवधनाययोग ॥ ॥
उदकस्यर्गनै ॥ ॥

ॐ यजायनयस्वाहा ॥ ॐ अम
यस्वाहा ॥ ॥ नमो वक्रायुगी
यदलोदयालवक्रायुक्कलन
नागयकयकलीलीलक्रीनलकु
नवलिन्यउजा । नागससकुदास
र्वधृगाहृमि ॥ ॐ यूर्ध्वद्वीमि ॥ दृ
गाहृमियूर्ध्व ॥ ॥

नमोल्लाहृमिआनय ॥ श्रीहि

यागः ॥ धर्म ॥ यदाकगतितीमिर्ध
यंयामृतसमन्विर्ग ॥ समिधंययूर्ध्व
यूर्ध्व ॥ नकवसुगुमालिका ॥
ॐ नमो नय ॥ नयगु ॥ अथ ॥ ॐ
ॐ द ० रुवीमि ॥ आपोशयुजत ॥
संकल्प ॥ दृगाहृमिकमदतिला
हृमि ॥ समिधं दृत ॥ स्वस्वददन
यूर्ध्व ॥ वक्र ॥ दि यूर्ध्व ॥ यमिष्टा
॥ गिलाहृमियूर्ध्व ॥ ॥

नमोल्लाहृमिआनय ॥ राजर्ष
लासटवासमिधंयत्रगस्यीयूर
षतजानकीर्ग ॥ ॐ अर्थमर्नदर्व
कीन्यामिमयकृग ॥ सनार्थमाय
व ० यमाम्चकुमायग ० स्वाहा ॥
यकुवानयत्रदाय ॥ ॐ नमो नय
॥ १ ॥ ॐ यूर्ध्वनार्थयवृगलाजा
नावयनिका ॥ आप्यमानकुमय
मिधंकाहृगथासमस्वाहा ॥ ॐ
दमनयधृगन ॥ २ ॥ ॐ मीला
जानावयाश्री ॥ श्रीसमधीकवर्गव
। समकुवावसंवदतर्गदमित्रनृम
यतामिय ० स्वाहा ॥ ॐ नमो नय
नत ॥ ३ ॥ ॐ नमो नय ॥ यलाज

निं॥ ॥ कंन्यायास्नाता जादावजी
विषययमकुः॥ ॐ गृह्णामि न सो
गृह्णाय रुक्मं मया यत्नया जलदक्षि
र्यथामे॥ ॥ गणपूज्यमासविनायनीधि
मर्द्धं लोभं गमय यथायथं वा॥ ॥ अ
माहममिसात्व० सोत्वमस्यमा अहं
सामाहममिमृद्धं दीनं हं यथि वीर्यं
गावहि विवहावहे समनं तादक्षव
हे यजं यजन्त्यावहे यूर्णं विश्वावहे
वहन्तं॥ ॥ गमं उज्जयय॥ संधिथात्र
विष्णुः॥ समनस्यमानो॥ यत्नमगत्रद
॥ गमं जीवमगत्रद॥ गम० गृह्णाम
गत्रद॥ गमं॥ ॥ अग्निमन्त्रं कुरु कुरु न
मवविवाह॥ ॥ अथ कुरु कुरु न
यादुखी मस्मान्मात्राह यं जामागा
दक्षिणेयादनेव ध्रुवामयादने अत्रा
हयनिमकुः॥ ॐ अत्राहमकुमन्मा
नमन्मेवत्व० कुरु कुरु॥ अग्निनिष्ठ
युगान्ताववाधस्यपुनं नायनः॥ ॥
जानागुय० नीयं॥ मद्भलमहालद
आदिनं आह्वामववत्रागार्थं नायः
निगथा॥ ॐ सनस्यगीयागमिदं अ
नवाजिनीवनि॥ यांत्वाविश्वस्यह
गस्ययजायामस्यागग॥ यस्याहं ग०

युक्तिरिति लोभात्सुगुनकं १५

समस्तवयस्याविश्वमिदं जग०॥ म
अगार्थं नास्यामियास्मीनामूकमय
॥ ॥ कुरु कुरु॥ ॥ गगापू०
वधूयथाजामागा अग्निपुनीगव
द्वायदक्षि० कुरु०॥ ॥ वृषेण
नहुर्द्वज्जीनिनद्याय॥ ॐ तम० गं
रवाय॥ ॥ यत्रिकमयायस्मान
मिदावर्तन॥ अन्वयस सगावनद्या
य॥ ॐ यजायगेत॥ ॥ यत्रिकम
यादवन्त॥ अक्षिनेमृत्त्यस॥ ॐ ग
ववाय॥ ॥ हासानगात्॥ ॥ जामा
गुलप० नीयं॥ ॐ अयमन्वयस्यव
हगसूर्यामरुहनासह॥ यून० य
गीथो जायादा० प्र० यजया सह॥
गमो नोयुर्ववहिलालाजालाम० ३
॥ सांख्यं गुरुतानिकुरु०॥ अन्मा
मात्राह तानिकुरु०॥ अग्निपुदक्षि
र्ण॥ वृषेणान् अग्निनीनद्याय॥ अन्म
यस सगावनद्याय॥ नैमृत्त्यसहासा
नद्याय॥ ॐ अयमन्वयस्यवहनि॥
युर्ववहिलालासुनहिलालाजालाम०
३॥ सांख्यं गुरुर्ण॥ अन्मा मात्राह
य॥ अक्षिनि नत्रावहासान॥ ॐ

नथात्राहय॥ ॐ हूँ नानिमी
दीतिराध्या हूँ यन्मा॥ हूँ स
रुपदकि (वायु हूँ यन्मा निमी
दति ॥ श्वानामनयनदकि वाविया
वकात्रयाय ॥ ॥ ध्रुवदर्शनमकु
॥ ॐ ध्रुवमसिधुर्वलायथा मिधु
वेधियाधोमयिमर्द्धादावृहस्य
मि॥ मयायथायजावगीर्णजीव
नद॥ नम॥ मरुतसन्तर्वदधि
यकवधून ॥ लासालावमालनस
दूत ॥ युगिष्ठा ॥ ॐ शुर्विकीजजति ॥
॥ यूर्यवदावनकाय ॥ ॥ य
नर्वधूलखनकायमकु ॥ ॐ स्वकि
नामिमीगा ॥

अरुसिंहासनसधाननद्री ॥ सीखा
रुगि ॥ राजादम ॥ भाकि कथोष्टि
क ॥ वाक्काययुजा ॥ ॥ यवधध
न्यादि ॥ ॐ अग्नेयसृष्टिदुगयखा
रु ॥ वलियुजर्त ॥ घृतदीयवुकि
कारुम ॥ वायधिमरुम ॥ ॥
वत्रिरुगर्ण ॥ दकि वादान ॥ वा
वनगृध्र ॥ संववयासन ॥ ध्रुव

ॐ दवागठ ॥ ॐ अयायमि ॥
अमीसा ॥ जायसाग ॥ ॐ मृष्यद
मिअगर्णधदि ॥ वक्राअग्निआ
लागीर्द्धाद ॥ ॐ गनूया (नसि ॥
वावनउलनागिधकचंदतसि
दूतसकुवागीर्द्धाद ॥ मरुआरथि
यगिष्ठा ॥ ॐ मनाहगि ॥ वदावन
काय ॥ ॥ यरुविसर्जन ॥ द्रुवा
यिखाकाय ॥ ॥ मीयूनवर्थका
दिसीलासालावस्रमिकसस्यन
मरुताजननक ॥ गरीगकगया
गमम ॥ ॐ निविवाहाविधिः ॥

सनिमायक्रमउयनयिथकादिस्
कीयूनवर्तखधालथस्यलासाला
वयक्रमउयदूतयन ॥ स्वकि
सस्यन ॥ रुणीनिनययक गगवृ
दकानकरिवायक गतावछान
क ॥ निर्मरुनवलि ॥ वक्रासस्य
नगनक ॥ ध्रुवदीयार्क ॥ मरुग ॥
अगर्णधदि ॥ मरुतागयास
कुजनत्वाय ॥ वदनाद्यागीर्द्धाद
॥ वदावनकाय ॥ मरुआरथिय

मूलरुवक्रासगय
नयनमागुगय

विवाहोदेश प्रत्यारम्भवत्सर्वनविधौतत्सर्ववि०
मरुडलविसर्जन हस्तप्रक्षालनं॥

ॐ अग्नेयसृष्टिदुगयखा
रु ॥ वलियुजर्त ॥ घृतदीयवुकि
कारुम ॥ वायधिमरुम ॥ ॥
वत्रिरुगर्ण ॥ दकि वादान ॥ वा
वनगृध्र ॥ संववयासन ॥ ध्रुव

निष्ठा ॥ मासयुक्त्यायक ॥
लक्ष्मणलक्ष्मण्यकावस्यसिक्त
सुन ॥ सुनो जननक निष्ठा
नकनककाय ॥ धर्ममालाला
धर्मधर्मनलिखा ॥ सुनयाक
कन्याकालवकामगहनसा ॥ न
धर्मयक्षसिंहसुनसवाकाव ॥ न
यान ॥ विष्णुसूक्त्यायक ॥ निष्ठा
सिंहन ॥ सिंधुकायायिठिनि ॥ यूर
यकायक ॥ धर्मकायधर्मनकावक
न्यायाक ॥ यूरयनयूरयवृष्टिया
वक ॥ वृक्षालंखनगूरिषक ॥
लाजाकालासिधक ॥ यूरकल
गकायक ॥ धर्मगम्यादिन ॥ वृक्ष
यूरनिवाया ॥ ॥ कलगलंख
वृक्षालंखमूकावयाललकाय
॥ वृक्षालिषककाय ॥ सुनयन
यूवायुक्त ॥ दंमशुदंन ॥ धर्मयूरनि
वायककायक ॥ सुनयायुक्तलि
न ॥ जात्रियायुक्तलिनकाकायक
॥ धर्मदामजीत्रियायुक्तलिया
धर्मसमलंगयायायुक्तवय ॥

मृनिनीरुलिनीहासागताव
नवृदकाययसिंधुकावकाव
य ॥ वधुवृवर्गजामालिवला
वक ॥ उक्तवतकायक ॥ विष्णु
वृषाणमूक्तसिंहनिसालनाय
वायुक्तमाल ॥ ॥ यूरययादा
नसर्थकादिसिंधुलासावायुक्त
सुनानगनककाय ॥ धर्मलिख
सिक्कासुनयायकाव ॥ वायुक्त
यानसाकयनवियकवधुनजा
मागसुनयाकनकायसुन
वियक ॥ नक्षत्रायन ॥ नयवियक
॥ यूरययायकादिसिंधुवियक
क ॥ नक्षत्रयासुनयनिसुनका
जनयायक ॥ नक्षत्रमालकायव
॥ वायुक्तनक्षत्रवायुक्त ॥ सुन
राजनययकलकाय ॥ ॥ वा
युक्तयुजादकिष्ठाक ॥ यजमानाम
कस्यसमननयायासुनराजननि
मिथर्थवायु ॥ यजमानाणीवृद्ध
॥ धर्मसमननयायाविधि ॥ ॥
धर्मसुक्तिवृथा ॥ धर्ममालालाया
य ॥ सुनराजननय ॥

॥ अथचतुर्थीकर्मयाय ॥
नगादीयवादकंकृत्वा ॥ यन्मृग
कृगणिकर्मयाय ॥ यथशविधि
मृगकलभर्जनं ॥ युक्ताग्रसक
लन ॥ सद्यःसद्यःकायासीयाजाया
गकायवेरु ॥ वलिनागजागामस
वरिर्धनानादिसहस्रददनयुजा ॥
ध्रुवदीयादियनिष्ठाजायकाग ॥
गमोऽथयदासाधनादि ॥ आर्यस्का
लीवरुक्कालीग्रसकलं ॥ युगयर्ष
समाङ्गनं ॥ आर्यस्कोत्ताद्युगनिष्ठा
य ॥ उंसदीनायथासीनि ॥ गग
न्यत्रविधनं ॥ यन्मृग ॥ उधन्यम
सीनि ॥ ककाय ॥ उंकृकृतासीनिक
कूटनं ॥ उवर्षवृद्धनिर्झलासग ॥
उयनायुग ॥ युवाटनं ॥ उदवाव
॥ सविगतिः दवरान ॥ गवलिसनं
॥ उंसुखनि ॥ नगमिसुखय ॥
॥ उंसुयदुगति सर्वकृगणिक
वग ॥ असादगसमिधहाम ॥ यूवा
द्यात्रउकनाद्याननं ॥ यदाङ्गमिय
ययानूनाम ॥ उयजायगयसा
हा ॥ अत्रिकृकृयाद्वनजलि

मलासलखन (थल्यान ॥ उंकया
लायसाहा ॥ उंसुययययि
कलदवानायाययि कत्रसिवा
कृगल्लानाथकामउयधामिया
स्ययनिष्ठागनूकामस्येतागयसा
हा ॥ उंसुययययययि काय ॥
॥ उवायायाययि कलदवा
नायाययि कत्रसिवा कृगल्लाना
थकामउयधामियास्येयजाद्यी
गनूकामस्येतागयसाहा ॥ उंसु
वाययययययि काय ॥ उंसुय
॥ उयययि कलदवानायाययि क
त्रसिवा कृगल्लानाथकामउयध
वामियास्येयउद्यीगनूकामस्ये
नागयसाहा ॥ उंसुययययय
यि काय ॥ उंसुययययययि
कलदवानायाययि कत्रसिवा
कृगल्लानाथकामउयधवामिया
स्येगृहद्यीगनूकामस्येतागयसा
हा ॥ उंसुययययययययि काय ॥
॥ उंसुययययययययि कलदवा
नायाययि कत्रसिवा कृगल्लाना
थकामउयधवामियास्येयय

चरुधीनलिकाथिनाययूजानिव
नन्वात्रमायावदयूलियूजायाना
यिलायकशुभा ॥ इमेकाङ्कनिक्रः
निवगनयूजायंवायहात्रनर्ग ॥ का
यनाययार्गयंवायहात्रयूजाङ्काः
दूस्त्रयाकमला १ रुसिकुङ्क ॥ यू
जाधूनकाववियनथियमगवस
मय्यरुकोमालयसुर्ग ॥ लिहावः
यावयूनयलिमवयाउसथानर्क
वयमगव ॥ आचार्यस्ययसास्य
हामयायययालथवन ॥ कलन
१ मय्यजा ३ खालर्जनवलवलि ४
४ मलानवल २० यययागाकाजा
४० जलसिवलि १ गालावययय

किंनं.मधिकसिविये.तमकलंविये॥

[illegible]

रुना गललानकाट (थ १०८) आर
नकाय ॥ लं गठ मंथा स्वया पि
वखाल ४ ॥ थन यजमान त्वं दू
न ॥ वावाथ शन एहि शलसाने दू
थ शल गीथिया दू वन रुनि निन
नवृद कानका स्वायक ॥ लं सा स्य
दू गाव दघ त्रिस्तु खान गनक दू
सतयाक मला १५ वलं दू जाय ॥ रु
नि निन गवृदकां मू नि नि य सा द
पिठनी दव लं दू जाय ॥ थं हा व या
व मां सा दू गिया य रं य धा ना हा य
॥ पूर्य जाय ॥ अथ लं का रं य धा ना
सा हा व या व च या ग दू वन जल सि
वलिस सा कलू य रं य धा ना ॥ वलि
वि स रू न ॥ दन वलि कू य ॥ द घ
त्रिस्तु आ या ग या नंद कि ॥ पूर्य
याय आ रं सा स गान ॥ वल सम दू
खान मा रु नी ए कानक अ व दू व
नका स्यं दू ॥ दन वलि लि हा व ले हा
वलं का लं खू स हा कल या व अ यः
नि स य रं नि वि या व र्वि का हा ल
द य रं दू मा नी स ग लं लं सा य क
ल कू म ॥ व या ग दू वन को गल स

लं ख ग या व लु गि या य क सकल स
लं ख वलि वा य क थं का दि स्य म म्याः
ला आ दि न लं सा स्यं दू न गल स य न
य नि स सा र लि कू न (थ सन ॥ थ वि
लि का ठि लि अ य थ य धा कि न (थ ल
अ ग ला य ॥ म ट रं ग ल वा न दू य ॥
ध न व लि य वि य ॥ दू दू ल मा न य सा
स्यं का ठि लि या वि न न ॥ दू मा नि स न
न न वं सा च क ॥ थं ठि लि थ व न वं सा
य नि न रं कू क दू वा थं थ हा व डि म
थं कू ठि स आ या ग स्यं या सा स्यं वि
लि न वं द कू ठि लि कू दू दू जा या य ॥
च न रं सि धू अ जल न व ल थ ल व वा ला
व ॥ ऊ जा म ८ खान ला खान मां ग रं व
च क ॥ सिं दू नि वा ना अ य थ य वा दू या
गि ख लि सकल स अ दू वा ल क रू म
गा का रं य य गा का न व ल व लि म
लान व लं धू नि म न रं आ र थि ॥
आ वा ग स्यं दू व न व लि वि या व स क
ल वं व दू आ दि थ व र म लु न न्या स
न या व म लु नं अ धि कान या य य ज
मा ना दि न खान न न क अ र न धा दि ॥
थ न लि न व ल व लि दू कू हा व य नि
लि ला य ना सि व क म मा ल लं य न
लं ख न हा य लान का न धा ८ न

१) आक्रमणपूर्वादि

५६६०७

रुतेनमः श्रीवद्वक्त्रे नवायामन्युष सुखासीनंदवद्वंशितोचनं। गच्छतं पत्रिपपुष्पाद्यमी
पत्रमभ्यर्चं॥ पार्श्वतुवाच॥ एगननसर्वधर्मोदुसर्वभक्तुगमादिया। अमदद्वानर्धमने
सर्वसिद्धिपदं नृभ्यः॥ सर्वमोर्ध्वे वेरुगानां हि गार्थं वांकिर्गंमया॥ किं गतमनु गच्छ
भक्तिपुष्पसाधनो॥ अङ्गं न्यासकरं न्यासवीडं न्यासमेच्छितं॥ वक्तुमर्हसिदवभममहर्षविवर्द्धनं॥
श्रीरुगवान्वाचा॥ गृध्रदविमहामनु मापदद्वानरुदुर्कं॥ सर्वदुःखपुणमने सर्वगतनिवर्द्धनीश्व
यस्मानादिनामनां द्वासादीनां विगेषगथा नाभनेस्तुतिमार्गेभेमनु गच्छमिमेप्रिया॥ ग्रहगच्छ
यानां च नागर्नरुयवर्द्धनं॥ स्वरुद्विभुमिमेमनु सर्वसात्रमिमेप्रिया॥ सर्वकामार्थदमनु गच्छ
रागपुदं नृभ्यः॥ पुनर्वर्षपूर्वमुक्तीयादीपुनवमद्वर्ग॥ सद्रकपिनिवेपथ्यदायदद्वानभयचा॥

कनद्वयं गतं पञ्चादृकायनगठदियगु॥ दधीपुनवमद्वुगामं गाद्वुप्रमिमं प्रिया॥ मंशाद्वानमिमं
दविने सावस्यापि दुर्ज्ञेयं॥ अत्र काभ्यमिमं मनु सर्वगतिकुसमन्विता॥ स्मरन्धवमं गुणरुपुग
विभयका॥ विद्वद्वकिरुयार्क्षवेकासनुद्रादिवयुजा॥ प० द्वापा० यद्वा विपूजयद्वापिपुष्करी॥
नाथिजीनरुयं वा विग्रहगच्छरुयं गतम्॥ नयमात्रीरुयं गतम्॥ सर्वगसूखवान् रुव०॥ अय्यनाम
मेभ्वर्यपुण्यो गादिमं पद॥ रुवन्किमं गतं तस्य पूरुकरुया विपूजनी॥ श्रीपाद्विपूजा॥ यत्र वर्त
वधानामत्रापदद्वानरुदुक्क॥ त्रयाचकथितादवहेतव०॥ रुम॥ गतनामसद्वस्तुलित्रय
तासर्वदा निव॥ सात्रमद्वुल्लग्नं वा नैनामाकृष्टं गच्छेत्॥ श्रीरुगवान्वाच॥ यमुसेकीर्णयदं ग
सर्वमनु निवर्द्धनं॥ सर्वान्कामानवाप्नोति साधक॥ सिद्धिमवय॥ अद्य विपुवभूमिर्नववसा

[illegible][illegible]

वीगवान्॥ ह्रस्वनामाहनस्तुम्हीमात्रगक्षाएनस्तथा॥ मुदुनीसांजनयुवादेहहामंउहवितथा
 वतियुज्वलितेनात्याकामीकामययाक्म॥ सर्वोपक्रोत्रकाड्काहेतयुतनिषवित॥ कातीकता
 निषिष्ठकाके॥ कासिनीवशकृद्वणी॥ सर्वसिद्धिपुदावेद्य॥ विष्णुयुतावन॥ त्रक्षरुत्रशो
 नासहेयवशमहात्मने॥ मयागकथितं दवित्रहस्यं सर्वकामिकै॥ यच्छंदं प० तिस्रं नाना
 यज्ञतमूर्त्तम्॥ १०॥ नेतस्याद्विर्गकिष्किन्ननागसोएयकथा॥ नभष्योहेयं किष्किपुष्पाको
 तिमानव॥ कश्चि॥ पातकानां हयं नेव प० क्कायमेन गृही॥ मानीह यमाऊहयं ग॥ म॥ श्री
 नाभिर्जहय॥ डी॥ सातिर्कमहाधाय गथम॥ दुःखपुदहर्भे॥ वभनेच गथमयोत्र प०
 स्मि० सुमाहिग॥ सर्वपुनःमनया किरयागैवकीर्त्तनात्॥ अकादमसहजमुप

धत्रनमृचाग॥ शिसम्भीय॥ प० द० विसम्भत्स नमगन्त्रित॥ ससिद्धिं पाप्मयादिस्मृं इति
 मपिमानव॥ स० मो॥ साङ्गमिकाममुसज्जुतालेगं मही॥ गाजाभक्तुविनाभायऊष
 मासाखर्कपून॥ गणीवोत्रय॥ त्रैवनागयथवर्गवान्॥ ऊषंमासगुयं गणीगाजाने
 यसमानय०॥ धनार्थीचसूताधीयदागधीयम्मानव॥ प० द० दानयं यदावात्रभक्तं
 तथाविधि॥ धनं पूजाकथादानुयापुयात्रागर्भय॥ तीताएयासुमुद्यातदविसर्ग
 नसंगय॥ यानुयानुसमीर्गका मानुक्तां स्तनाप्रतिनिधिनं॥ अयकाभमिदं मुमुनद
 गंयसाकथयिन्॥ सुकृतीनायगभक्तोयसज्जयदं तवर्त्ति॥ दद्यात्सुमुमुनिदं पृथ्वीसर्व
 कामसुसुपदं॥ अन्नं वस्त्राभिदवसायथ॥ ताप० १० मन्त्र॥ नेमुदुस्मृत्तिकर्त्तकामं सह

[illegible][illegible]

धर्मोदिनास्य भूधर्मवादिनास्य॥ दधय॥ निरसि॥ वृहदात्रभक्तसुखयानम॥ मूर्ध॥
 गमयगीकन्दसंनम॥ द्वादिवद्वक्त्रेनवायदवतायेनम॥ ततामूर्तिनास॥ तगय॥ द्रो
 योर्द्वीगमनायनम॥ अंगुष्ठया॥ निरसि॥ द्वैर्वैतसूत्रवायनम॥ तर्क्या॥ वदन॥ द्वैर्वै
 अर्धागारायनम॥ मधमया॥ द्वादि॥ द्विर्विवासायनम॥ अनामिकया॥ गुर्ध॥ द्वैर्वै
 सुधाजातायनम॥ कनिष्ठया॥ पाद॥ द्विर्विवासा॥ द्विर्वैतसूत्रवायनम॥ द्विर्वैत
 सूत्रवायनम॥ पूर्व॥ द्वैर्वैतसूत्रवायनम॥ द्विर्वैतसूत्रवायनम॥ द्विर्वैतसूत्रवायनम॥
 वक्तु॥ द्वैर्वैतसूत्रवायनम॥ पट्टिमवक्तु॥ द्विर्वैतसूत्रवायनम॥ द्विर्वैतसूत्रवायनम॥
 हवक्तु॥ द्वैर्वैतसूत्रवायनम॥ पट्टिमवक्तु॥ द्विर्वैतसूत्रवायनम॥ द्विर्वैतसूत्रवायनम॥

वा ३

द्यमीगमनादिषुयाजय॥ तगठकनांगनासो॥ तगठकनांगनासो॥ तगठकनांगनासो॥
 तर्कनीत्यां स्वाहा॥ उँ द्वैर्वैतसूत्रवायनम॥ उँ द्वैर्वैतसूत्रवायनम॥ उँ द्वैर्वैतसूत्रवायनम॥
 वात्यां वीषट्॥ उँ द्वैर्वैतसूत्रवायनम॥ उँ द्वैर्वैतसूत्रवायनम॥ उँ द्वैर्वैतसूत्रवायनम॥
 हा॥ उँ द्वैर्वैतसूत्रवायनम॥ उँ द्वैर्वैतसूत्रवायनम॥ उँ द्वैर्वैतसूत्रवायनम॥
 द्वाद॥ तथमवनिर्वं॥ बदीर्घयूक्यामवक्तु॥ वक्तु॥ वक्तु॥ वक्तु॥ वक्तु॥
 वाद्यानिकयथ॥ तमी॥ धर्म॥ तमी॥ धर्म॥ तमी॥ धर्म॥ तमी॥ धर्म॥
 रिकसुदर्मकल्पुसाहासिवक्तु॥ दिवाकये॥ नैवमसिमये॥ किंकिनीनूप्रमाद्ये॥ दीपाकात्र
 विसुदवसर्नसुपुसर्नकिमर्ग॥ रुक्माकागांवद्वकमनिर्भ॥ भूतद्वीदधर्म॥ गार्गसंनुधर्म॥

उद्यहस्तकनसंनिर्गच्छिनयनं नक्षत्रं गगनाजमुजं सप्तगणैर्वनदं कणसमहयं धृतं दध्मनं कर्म ॥
नीलश्रीवसुधात्रयस्य लक्षणं नीलांशुवृक्षाक्षं वैश्वकानूतवाप्तं ते यस्तु दं सदा तावथा ॥
तामसं शुभं ॥ अथानीलादिकान्कर्मणि सकलं मूर्धमासो मरुतं दिग्बलं विगतां
उपनृमथ इति खल्वेतादयानि ॥ नागं घृभै कपातं कनसत्रसि नृहं विजुर्गती प्रदं धुं स
र्वी कर्त्यं चिनर्गं मलिप्रयवितसत्किं किनी नृपूनासु ॥ इति ध्मनं ॥ सात्विकध्मनमाख्यातम
पमृयुविनाशनं ॥ अथूनासां गजनेन मयवर्जयेत्तु यदं ॥ नाजं मंभानमाख्यातं पृथक्मा
र्थसिद्धिदं ॥ तामसं भगुणमनं कृत्वा तृगगदीयदी ॥ अथ ध्मना नमो संयुष्यं स्वस्वयनं कृ
यागुं नृस्यायुजस्यं ॥ धर्मा धर्मादिदि ॥ कृष्णपीठं कर्ज ॥ ध्मनं ॥ ध्मनं ॥ ध्मनं ॥

सर्वधामपंकज ॥ ध्मनं ॥ गगनयूनध्मना आवाहनादिकं कृत्वा यथा ॥ कृत्वं सथाजग
यनम ॥ इति वासुधात्रयनम ॥ इति वासुधात्रयनम ॥ इति वासुधात्रयनम ॥
कृत्वं सथाजगयदी ॥ इति सत्किं ॥ कृत्वं सथाजगयदी ॥ इति सत्किं ॥ कृत्वं सथाजग
नम ॥ आनिमृदायुदधर्नं ॥ इति वासुधात्रयनम ॥ इति वासुधात्रयनम ॥
तुदिदं का ॥ लषपूजनी ॥ इति ध्मनायनम ॥ इति ध्मनायनम ॥ इति ध्मनायनम ॥
नम ॥ गगनामपंकजदसंयुजस्यं ॥ इति सत्किं गगनायनम ॥ इति सत्किं गगनायन
म ॥ इति सत्किं गगनायनम ॥ इति सत्किं गगनायनम ॥ इति सत्किं गगनायनम ॥
इति गगनायनम ॥ इति सत्किं गगनायनम ॥ इति सत्किं गगनायनम ॥ इति सत्किं गगनायनम ॥

तगश्चक्षुःपुष्पपुष्पापुष्पादि॥ क्रौं क्रौं दयाय नमः॥ क्रौं वीणित्रमस्वाहा॥ क्रौं वीणित्रो यो वषट्॥ क्रौं
कवचाय हुं॥ क्रौं वीं ननु गायत्री वषट्॥ क्रौं वीं वषट्॥ क्रौं वीं वषट्॥ क्रौं वीं वषट्॥ क्रौं वीं वषट्॥
तुं जाकिं नमः॥ तुं जाकिं नमः॥ तुं जाकिं नमः॥ तुं जाकिं नमः॥ तुं जाकिं नमः॥ तुं जाकिं नमः॥
मः॥ तुं जाकिं नमः॥ तुं दवीपुष्पाय नमः॥ तुं उमापुष्पाय नमः॥ तुं नृदपुष्पाय नमः॥ तुं मातृ
पुष्पाय नमः॥ वृं गिदक्षिणाय नमः॥ तुं दुर्द्धमस्वीपुष्पाय नमः॥ तुं उत्रं मस्वीपुष्पाय नमः॥
श्रुम्॥ गच्छ हि श्रुत्वा पञ्च वीं नमः॥ तुं दयाय नमः॥ तुं दयाय नमः॥ तुं दयाय नमः॥ तुं दयाय नमः॥
वदकनूपाय नमः॥ तुं कथं गाय वदकनूपाय नमः॥ तुं वायव्य वदकनूपाय नमः॥ तुं व नूपाय वद
कनूपाय नमः॥ तुं नेमि नूपाय वदकनूपाय नमः॥ तुं दक्षिणाय वदकनूपाय नमः॥ तुं त्रिमयाय व
दकनूपाय नमः॥ गच्छ हि॥ तुं वृं नमः॥ तुं मातृपुष्पाय नमः॥ तुं मातृपुष्पाय नमः॥ तुं मातृपुष्पाय नमः॥

[illegible]

[illegible]

द४॥ अर्ननविधिनादृष्टवदृक्४ पत्रसे नार्क॥ सवने (लक्ष्मि) रजंदा मिषं कुट्टमानस४॥
 पुर्वं कुर्ण पत्रवतं कीर्णं नालं संप्रय४॥ ०॥ अथ वदृक् सार्णय४॥ ०॥ प्रपृष्ट सखासीनं
 दवधवं जितावनमिषादिप४॥ ०॥ ०॥ विद्वंशं च नाना म्नावति
 मर्कुडयानधी४॥ दत्तनं याद्याखां या४॥ अर्कवद्वयं म४॥ ०॥ स्याद्वद्वयं कुप्रोदतिरवत॥
 रवगता मूखीदयामनु४॥ ०॥ द्वौ वगता मूखी सवर्ष इष्टानां वारं मुखं कयजिह्वां कीलय कीलेख
 यवृद्धिनामयद्वौ ०॥ स्यात् ॥ धर्तुं कनं मर्गं वा ०॥ धीवगता मूखोदगेन म४॥ धीव म्ना विपार्ये ॥
 ०॥ अथ धीवगता मूखी बुद्धामु विपार्य मनु स्यात्तामना धीवगता मूखी बुद्धामु
 लीदयता वाग्यदिनी उचिर्बुद्धं द४ ०॥ द्वौ वीजं स्याद्वागकिं ४॥ जिह्वां कीलय ०॥ ममद्

नमो नमो समीपस्वनां विनाशिनो सर्वप्रतिपादितानां वाचा मुखगतिमतिस्फुटनार्थं सर्वदिवास्फुटनार्थं
 किङ्काकीलनार्थं पत्रविद्याकुंदनार्थं स्फुटनार्थं भादुनार्थं एकलकप्रनाऊनवधार्थं म
 नावां किङ्काप्रनासिद्यार्थं प्रवत्तसस्त्रीयाद्यार्थं चक्रुस्तसस्त्रीपत्रिहार्थं वगतामस्त्रीकाण्डार्थं
 विनियोगशः प्रथमा सथा उं ह्रीं मूं तुका ह्यो नमः भावनामस्त्रीमर्कनी ह्यो नमः भावनामस्त्री
 मा ह्यो नमः भावार्चमस्वीकृत्य मनामिका ह्यो नमः भाविका कीतय २ कनिष्ठ का ह्यो नमः भाव
 द्विं नाभयद्वी उं स्वाह कनकतपुका ह्यो नमः भाव उं ह्रीं हृदयाय नमः भावनामस्त्रीमित्रसथा
 हा सर्वद्वयानां निस्वार्थे वषट् वाचं मुखं सुहृदयकवयाय दूं ॥ किङ्काकीतय २ नकुगयाय वी
 षट् ॥ वृद्धिनाभयद्वी उं स्वाहा नमः गुरुट् ॥ इति न्या स ॥ तमा भूतार्चनं गम्भीयां च मदानमतीस

भुकोनिसमपुत्री॥चतुर्भुजांविनयतांकेमसासुनसंस्क्रितां॥१॥मूर्धनंदकिंलयाभंयामक्तिंक्षेत्रं
 वक्रार्कं॥पीताम्बरधरांसाङ्गोदृढवीनेपयोधरां॥२॥रुमकुमुसुखांउवीगवन्मूर्ध्वगण
 नां॥पीतरुबलत्रयाद्यांस्वर्गुसिंहासनेस्क्रितां॥३॥वेङ्कयहजयत्रिभंगरुमसातोम
 भुक्चक्रयुगयाङ्गुतवीगवम्बु॥घाद्यापित्रुटधृतनूपूनरतेभार्गोनिर्घस्रनामिवगतो
 विपूजिककीत्तां॥४॥वामकत्रयययदकिंलयावक्ररुक्तांमयास्त्रिगांमूर्कटमस्तकसूर्यातारां
 उन्नामिनीसहत्रिपूत्रिगदासयनीनिर्घंवदाप्रिबगतांत्रिपूवायनाभी॥५॥पीतवम्बुहिने
 जांवेद्विभुजांदमनोर्कतां॥मिसापर्वगतहस्तांत्रिपूकपांमदाकुटां॥६॥सानन्दामथद
 वभीङ्गगत्तुंएनकात्रिनीं॥मदनस्यनगधमपिपीतिरुमृकगांयनां॥७॥महाविशामहामा

यास्तोत्रकस्तुतुप्रदा॥ यस्याः स्मृतं नमस्तुभ्यं॥ सा संस्तुतुयत्कृतं॥ १०॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥
क्षीं तस्याधस्ताद्वयंनुहदं॥ तस्यैवाधःकृतं तस्यैवाधःकृतं॥ ११॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥
लिषुक्तं मर्मगतं॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥ १२॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥
दधी॥ १३॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥ १४॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥
गामयाभ्यर्चयत्कृतं॥ १५॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥ १६॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥
यकृतं नमस्तुभ्यं॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥ १७॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥
जीस्यतामि॥ १८॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥ १९॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥
धामयाभ्यर्चयत्कृतं॥ २०॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥ २१॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥

प्रतिवित्तं सुवन्द्यननां॥ गदारुतविपक्षं कतितातजिह्वं च सांस्तुगामिद्वगतामृत्वीं
विमृशयन्मनःकृमिनीं॥ १०॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥ ११॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥
नमस्तुपातितवियुक्तं तस्यैवाधःकृतं॥ १२॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥
स्वपुष्पमिध्याकिर्तेत्यवितयं सद्योच सद्योच सद्योच॥ १३॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥
ठवीतपूष्याभूतिं मृदावासकं नमस्तुभ्यं॥ १४॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥
एकवर्णादीर्जस्मयस्याधिर्वितस्यामिन्मृशयत्कृतं॥ १५॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥
कुक्कुटदत्तं विपक्षं दत्तं नमस्तुभ्यं॥ १६॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥
तु॥ १७॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥ १८॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥ १९॥ यामयाभ्यर्चयत्कृतं॥

रवस्तुतिस्तव दार्दिनां ॥ १८ ॥ वादीसूक्तितिरं कनिकितपतिर्बेधनत्रयमीति कुधीषमकमिदं
ऊनष्टसूक्तनेतिदिशान्गुगं ॥ गवीखर्वतिस्तवीविचुञ्जतिस्त्वयं ॥ अयस्त्रिगवधी निरा
वगतामृतिप्रुतिदिनैर्कस्यानिपुत्यं नमः ॥ १९ ॥ दूषस्तं एनमग्राविप्रुभमनं दानिद्विद्वान्नरं
एतस्वैतनं सदासृगदभं च तत्र समाकर्षणं ॥ सोताग्नेकनिकतनं ममदृष्टमः ॥ कात्रुधप्रु
कल्पमृगाम्पोनलमातिरञ्जुपूतमासागत्त्वदीयं प्रपुः ॥ २० ॥ सातर्कः प्रयमद्विषकदतनैः
किक्वां वसां कीत्तयवाक्तीं मूडयनामयाधुविषममं यो नृतिं स्तुतय ॥ २१ ॥ नृत्तुप्रुत्तुत्तुया
धुनदयात्मेनां निपीताम्वनविध्वोद्यं वगसेरुनपुनमगां कल्याणिपुत्यं नमः ॥ २२ ॥ सातर्क
नविरुद्रकासिचिञ्जयवागादि विष्मग्रयणी निष्ठावगसेमर्कमिह मयका मणिवाभन

मा ॥ सातर्कगिपिपूतपरात्यनगतस्त्वर्मेपवर्मपुदं दासाहं भनभगनः ॥ कनूपायाविहवध
त्रिणाहिर्मा ॥ २३ ॥ पाण्डुसूत्रेभिद्यचेतिपूत्रितयामरुक्तं मूक्तावली स्तुनतटपुवतावसीनां ॥
यीतां धुकात्तुनलकं चूकमात्य ॥ २४ ॥ ताम्युत्तपूत्रितमस्वीवगेता स्तनामि ॥ २५ ॥ स
कष्टवीत्रसंधपुहृत्तलसमर्थं वंधर्मेतात्रिम ॥ २६ ॥ विद्यावाधविवाधपुक्चितानुप
तोदिवाकात्तनिभया ॥ वध्वत्तं एतं वात्रिपूवधसमथनिधितिर्न तल्लतागकन
मिक्कनुति कात्तं गवप ० नमिदं कात्रयदाधुत्वेर्य ॥ २७ ॥ त्वं विद्यापनमात्रिसाकज
ननीविध्वोद्यसं कृदिनीयाषाकर्षलकात्रिपीत्तमरुदं ॥ २८ ॥ अकसं कृदिनी ॥ २९ ॥
व्रीटनकात्रिपीकृत्तनमनः ॥ ३० ॥ संप्रादुर्ददयिनी किक्वाकीत्तनरं गवीविजयमं बुद्धि

[illegible][illegible]

अंशुं कल्पयेद्गं यमुनां तर्जनी भवेत् ॥ नर्मदा मधुमं गुल्फो भनामा
गोमती भवेत् ॥ कनिष्ठा तु भवेत् सिन्धु कश्मिर्धो तु सागरः ॥ एतद्गुं शु
मुत्ते च ब्रह्म तीर्थं प्रकल्पयेत् ॥ शनिवाचं प्रकर्तव्यं कर्तव्यं आभिषे
ककं ॥ ब्रह्म तीर्थं मित्रोक्तं सर्वपापक्षया यव ॥ शनिपंचमीर्धो दक फलं ॥
पवित्रं तु कैरयस्य यस्तु गंधं समारभेत् ॥ हृद्विरेण समास्त्रिषो न ते तु विंग
मिच्छति ॥ अन्यत् ॥ पवित्रं यस्तु यस्तु गंधं समाचरेत् ॥ आसुरं

तद्देवेषु द्वं पितृहाचोपजायते ॥ वह्निं राहुं पुराणे ॥

मत्स्यपुराणे ॥ उत्सवानन्द संताने यज्ञोद्वाहादिमंगले ॥ मातरः प्रथमं कुर्याः पितरस्तदनन्त
रम् ॥ पितृणां रूपमास्थाय देवाश्चान्नैसमश्नुते ॥ तस्मात्संवेन दातव्यं वृद्धिश्चाद्रुसंवेदा ॥
पित्रादिर्नैव मात्रादिर्विश्वे देवास्त्रयः क्रमात् ॥ कर्तुं मातरि जीवित्या महश्चाद्रुविधीयते ॥

रमातृणामग्रतः श्राद्धं पितृणां त
 दनत्ररम् ॥ ततो मातामहानातु-
 वृद्धि श्राद्धं विधीयते ॥ ॥
 अधुनाविधिं वक्ष्ये ॥ ॥ यजमा-
 नेनाचमने ॥ चन्दनपष्पादिभूष-
 णां ॥ चन्दनाक्षतपुष्पजलंगुही-
 त्वा ॥ ॐ अशादि यजमानस्याः
 मुक्तस्याः भुदयिकयवोदकवृ-
 द्धि श्राद्धकर्मकर्तुं श्रीसूर्याया
 र्घ्यनमः ॥ ॐ आकृष्टे ॥ पुष्पं न-
 मः ॥ ॥ थनपादार्घ्याचके ॥ ॐ
 विश्वेभ्यो देवेभ्यो अग्नेवैश्वानर
 देवेभ्य इदमासनं वृद्धि ॥ पुष्पं
 वृद्धि ॥ एतद्वाकेन पादार्घ्यं वृद्धि ॥
 मातृपक्षे ॥ ॐ मातृपितामही
 प्रपितामहीभ्यः पितृपितामह
 प्रपितामहेभ्यः मातामहप्रमा-
 तामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः
 सूर्याय नारायणाय सदा
 शिवाय गरुडाय क्षेत्रपा-
 लाय षोडशमातृनवदेवते-
 भ्यः इदमासनं वृद्धि ॥ पुष्पं २ ॥
 एवंवाकेन पादार्घ्यं वृद्धि ॥ न-
 दिकेश्वराय आचार्य इदमा-

सनं वृद्धि पुष्पं २ ॥ ॥ यजमा-
 नेन स्वपादं प्रक्षाल्य मातृश्राद्ध
 भूमिं गच्छेत् ॥ पटुवासनं चोये-
 ताये होले ॥ मालको चोये ॥ वा-
 ह्मणादेस्वस्यं चोने विश्वेदेवयं
 स्वये यजमानपश्चिमश्चये ॥
 ततो यजमानेनाचम्य ॥ पूजावा-
 रितो नोवायेके ॥ ॥ थनयवो-
 दकच्छाये ॥ धलि क्येलसि-
 तछो सेतु लंख सलावसंते-
 ॥ ॥ लंखतये अंभोवरुणदे-
 वताये नमः ॥ ॐ वरुणस्यो नमः
 नमसि वरुणस्य स्कम्भसर्ज-
 नीस्थो वरुणस्यः क्रतुसदन्य
 सि वरुणस्यः क्रतुसदनमसि
 वरुणस्यः क्रतुसदनमासीद
 ॥ ॥ तच्छोते ॐ यवविष्कदेव
 ताये २ ॥ ॐ इदं विष्क ॥ ॥ दू-
 र्वा ॐ प्रजापतिदेवताये २ ॥ ॐ
 काण्डात्काण्डात्पुरोहन्ति पुरु-
 षः परुषस्यति ॥ एवानोदूर्ध्वं प्र-
 तनुं सहस्रेन शतेन च ॥ ॥ दधि
 ॐ उमापतिदेवताये २ ॥ ॐ नमः
 शम्भवाय च ॥ ॥ वदरीफल

ॐ वृहस्पतिदेवताये २ ॥ ॐ वृहस्प
 तिअति ० ॥ ध्वतेयवोदकछा
 ये ॥ आरोदनं. ॐ सम्वपामिस
 मापओषधीभिः समोषधयो
 रसेन । स ० रेवतीर्जगतीभिः पु
 च्यंता ० समधुमतीर्मधुमतीभिः
 पृथ्यातां ॥ गायत्रीमन्त्रेण जपेत्
 धार १० ॥ ॥ पूर्ववत् विश्वेदेवा
 दिपूजनं ॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्य अ
 ग्रे वैश्वानरदेवेभ्य इदमासनं वृ
 द्धि. पुष्पं २ ॥ मातृपक्षे. ॐ मातृ
 पितामही प्रपितामहीभ्य. पितृ
 पितामह प्रपितामहेभ्य माता
 मह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहे
 भ्यः सूर्याय. नारायणाय. स
 दाशिवाय. गरुडाय. क्षेत्रपा
 लाय. दुर्गायै. षोडशमातृनव
 देवतेभ्य इदमासनं वृद्धि. पुष्पं.
 ॥ नन्दिकेश्वराय. आचार्याय इद
 मासनं वृद्धि. पुष्पं २ ॥ ॥ यज
 मानेन प्राङ्मुखो भूत्वा न्यासं
 कारयेत् ॥ ॐ गडाधराय हृदये
 ति षडङ्गन्यास ॥ ताहाय संकेत
 ने. ॐ अङ्गो नमः ॥ ॐ वरुणाय २

ॐ अपांपतये २ ॥ सेतो नवाले
 ताहायस. ॐ इममे ० ॥ ताहाय
 या अडमुनिनलंखपिकाया
 वलुखान दुंथने. ॐ ब्रह्मणे न
 मः ॐ विष्णवे २ ॐ रुद्राय २ ॥ से
 तो ताहाय या अडमुनीसंते. ॐ
 वरुणमूर्तये पवित्रकनमः ॐ
 पवित्रेस्थो ० ॥ ॐ वरुणमूर्तये
 चन्द्रनाक्षतपुष्पं २ ॥ ॐ वरुणमू
 र्तये धूपो २ ॥ धेनुमुद्रां दर्शयेत्
 तज्जलेनात्मानं सिञ्चयेत्. ॐ
 आत्मने सिञ्चनं नमः ॐ आत्म
 ने चन्दनं नमः ॐ आत्मने पुष्पं
 नमः ॐ आत्मासनाय २ ॐ आ
 त्ममूर्तये २ ॥ के. येतने. ॐ उत्त
 रे नमो देवेभ्यः दक्षिणे स्वधान
 वदेवतेभ्यः ॥ ॥ ताहाय यवो
 दकसला. पूजाभरिडथिस्पेत
 ये. ॐ सप्तद्याधादशा ० ॥ के
 वंतने. ॐ गयाये २ ॐ गदाधरा
 य २ ॐ पुरण्डरीकाशाय २ ॥ सेतो
 जोडं. यवोदकलंखन सकता
 रुहाये. ॐ अपवित्रेति ॥ विश्वे
 देवादि यवोदकयालंख

तुह शतये ॥ उं स वासाभ्यन्तरः
 शुचिः ॥ ॥ यो सो याव अपम
 धनपूजाभगिष्ठिस्थितये ॥ उं
 अशादि. यजमानस्यामुकका
 र्याभ्युदयिकयवोदकवृद्धिश्चा
 द्रुनिमित्यर्थं कर्त्तुं सतक्रियादे
 शकालद्रव्यशरीरभूमीवास्त
 रानां सुसन्निधानमस्तु ॥ मो
 तृपितामही प्रपितामही पितृ
 पितामह प्रपितामहानां. माता
 मह प्रमातामह वृद्ध प्रमाताम
 हानां. सूर्याय नारायणाय
 सदाशिवाय गणेशाय क्षेत्रपा
 लाय दुर्गायै. वोऽऽशमातृनव
 देवतानां सुसन्निधानमस्तु ॥
 विश्वेदेवादिपूर्वकं युष्मदाज्ञा
 महं करिष्ये ॥ उं कुरु ॥ ॥
विश्वेदेवस्त्वानतने ॥ उं कत
 वेश ॥ उं दक्षाय ॥ ॥ **मातृपक्षे ॥**
 ० उं गौरीयद्रासचीमेधा सावित्री
 विजया जया ॥ देवसेन्यास्वधा
 स्वाहा मातरोलोकमातरः ॥ हृदि
 पुष्टिस्तथातृष्टि. एतदेव त्वया स
 ह ॥ नन्दे नन्दिनीवासिष्ठे वसु
 देवस्य भार्गवः ॥ जया च विज-

योचैव संप्रेते हारमात्रिता ॥ मा
 तृपितामही प्रपितामहीत्यादि ॥
 पुष्पे च ॥ नन्दिकेश्वराय आचार
 य. पुष्पे वृद्धि ॥ ॥ **ततो विश्वेदेवा**
मावाहयेत् ॥ उं विश्वान्देवानं वे
 श्वानरदेवानं यजमानस्यामुक
 कार्याभ्युदयिकयवोदकवृद्धि
 श्चाद्रुनिमित्यर्थं अहमावाहयि
 ष्ये ॥ उं ओमासश्चर्षणी धृतो वि
 श्वेदेवासः आगत ॥ दास्वासं ० सो
 दाभुषः सुतं ॥ उं आवाहय ॥ ॥
ततो मातृपक्षे आवाहने ॥ उं मा
 तृपितामही प्रपितामही पितृपि
 तामह प्रपितामहान्. अहमा
 वाहयिष्ये ॥ उं तद्विप्रासो विपन्न
 वो जाग्रता ६० समिधं सेतद्विह्वा
 परमं यदं ॥ उं आवाहय ॥ उं नन्दि
 केश्वरं आचारं अहमावाहयि
 ष्ये. आवाहय ॥ ॥ **विश्वेदेवादि**
हस्तार्घ्यदिये ॥ उं विश्वेभ्यो देवेभ्यः
 हस्तार्घ्यं वृद्धि ॥ एवं वैश्वानराय
 उं मातृपितामहीत्यादि. हस्तार्घ्यं
 वृद्धि ॥ नन्दिकेश्वराय आचारय.
 हस्तार्घ्यं वृद्धि ॥ प्रत्यर्घ्यं वृद्धि ॥ ॥
एवं वाकेन विश्वेदेवादि. चन्द्र

नयज्ञोपवीतपुष्पधूपदीप॥
 अन्नगन्धादि॥ ॥ विश्वेदेवादि
 लंखतुलु २ तये॥ अन्नसंकल्प
 प. वदरीफलसेतुविये. विश्वेदे
 वादि॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो यथादा
 स्यमान अन्नसंकल्पसिद्धिरस्तु॥
 एवं. मातृपितामही प्रपितामही.
 पितृपितामहप्रपितामहेभ्यः मा
 तामहप्रमातामह वृद्धप्रमातामहे
 भ्यः यथादास्यमान अन्नसंकल्प
 सिद्धिरस्तु॥ नन्दिकेश्वर. आचार
 यातंविये॥ ॥ जलेन मण्डलं का
 रयेत्. पंचपुष्पावकीर्णं॥ यवो
 दक्रयालं खजोड्गवमण्डलस
 हायेकं ते॥ ॐ कारादिसप्तप्रण
 वगायत्री॥ ॐ मधुवाताऋताय
 ते मधुक्षरन्तिसिन्धवमाध्वीर्न
 सन्नोषधीमधुनक्तमुतोषसाम
 धुमत्पार्थिव० रजः मधुशौरस्त
 नः पितामधुमान्यो वनस्पतिर्म
 धुमा ३ अस्तसूर्यः माध्वीर्गो
 भवन्तु नः॥ ॐ मधु ३॥ अद्यादि.
 यजमानस्यामुककार्यस्य विश्वे
 भ्यो देवेभ्यो अग्रये वैश्वानरदेवे
 भ्यो मातृपितामही प्रपिताम

हीभ्यः पितृपितामहप्रपितामहे
 भ्यः मातामहप्रमातामह वृद्धप्र
 मातामहेभ्यो. अन्नसंकल्पसि
 द्धिरस्तु. क्रियापरिपूर्णा मस्तु.
 कालातीतेत्यादि॥ **केतने सक**
भने॥ ॐ देवसवितः प्रसुवयज्ञं
 प्रसुवयज्ञपतिर्भगायद्विद्योग
 ध्वं चः केतपूः केतन्नपुनातु वा
 चस्पतिर्वाचन्नः स्वदत्तु स्वाहा॥
 अन्नसंकल्पविधौ तत्सर्वविधि
 परिपूर्णा मस्तु॥ **विश्वेदेवादि लं**
खतुलु २ तये सलावसंघोड
॥ ३ अन्नसंकल्प अहिदमस्तु.
॥ ॥ केतने॥ ॐ इदमृज्योतिः
 पश्चात्सूर्यो ज्योतिः॥ ॥
ततो गवां च नं॥ ॐ सूर्याय इदं
 मासनं वृद्धि. पुष्पं २॥ **एवं वा**
केन॥ ॐ नारायणाय॥ ॐ सदा
 शिवाय॥ ॐ गणेशाय॥ क्षेत्र
 पालाय॥ ॐ दुर्गाय॥ ॐ नागाय॥
 ॐ शिखरनारायणाय॥ ॐ धन
 जेश्वराय॥ अलिमल्लकेशवा
 य॥ ॐ आर्यावतारलोकेश्वरा
 य॥ ॐ कपिलादिपञ्चगोमातृ

काभ्यः॥ॐभवसहितभवान्ये॥
 ॐहरमिद्रिदेव्ये॥ॐस्वेष्टदेव
 तय्ये॥ॐहनुमते॥ॐमानेश्वर्य्ये॥
 वाराहीदेव्ये॥ॐभीमराणेश्वराय
 ॐनृत्येश्वराय॥ॐपशुपतये॥
 ॐगुह्येश्वर्य्ये॥ॐपञ्चाग्रये॥ॐ
 गृहलक्ष्म्ये॥ॐकौमारीदेव्ये॥
 ॐअश्वत्थामाद्यष्टचिरञ्जीवि
 भ्यः॥स्ववाकेन॥चन्दनसिं
 हर्यज्ञोपवीतपुष्पधूपदीप
 इदंफलपुष्पतामूलत्यादि॥
 पीतचूर्णनमगुलंकारयेत्॥
 पञ्चपुष्पावकीर्णं॥स्तोत्रं पठेत्॥
 ॐनमःश्रीसूर्याय॥ॐयवाकु
 सुमसं॥ॐयस्यहस्ते॥ॐनमः
 शिवायशां॥ॐविद्येश्वराय॥
 ॐनित्यानन्दपरं॥ॐजयन्तीमां॥
 ॐभुङ्क्तेःसंकाशं वरदंय
 मधारिणं॥फणासप्रविभूषांगं
 नागराजंनमाम्यहं॥ॐशांताका
 रंभुजगं॥ॐभस्मांगशुभ्रजगदे
 ककान्तं पिंगाक्षचन्द्राक्षकेशव
 रतं॥विश्वभरं पश्चिमवक्त्रराजं

नमामिनित्यं च धनञ्जये शां॥ॐ
 गोगोष्ठवासीवरवेणहस्ते भु
 जंगकालीफणिमर्दिने च॥क
 दम्बमालाकृतकराळलग्ने गो
 पालवेशेशारणोपपद्ये॥ॐनमः
 सवित्रे॥॥नमोगवे॥ॐवन्दिता
 सिवशिष्टेन॥४॥ॐशिवशक्ति
 श्वरूपाय॥ॐप्रातर्यास्याकुमा
 रीकुमुदकलिकयाजाप्यमाला
 जयन्ती मध्याह्ने प्रौढरूपावि
 धिशिववदनाचारुनेत्रावि
 शाला॥संध्यायां वृद्धरूपागलि
 तकयजुषारुण्डमालावहन्ती
 सा देवी देवदेवी त्रिभुवनजननी
 पातुमोहद्रशक्तिः॥यस्याज्ञया
 जगत्त्रेस्था विरिञ्चिः पावकोह
 रिः॥संहर्ता कालरुद्राक्षो नम
 स्तस्मै पिनाकिने॥ॐसंकारास॥
 ॐनमस्ते हनुरुद्राय भैरवाय महा
 त्मने॥ब्रह्मचर्याय भीमाय भ
 यानक नमोस्तुते॥ॐउत्फल्लाम्बु
 जकर्णिकोपरिगता श्रीसिद्धिलक्ष्मी
 परा कर्पूरस्फटिकेन्दुकण्ठधव
 लानिःसरवपापापहा॥संसार
 र्णविदुःखपातकराणिः कं पना

सर्वदा श्रीमत्पंचमुखाम्बुजाद
 शम्भुजाप्रेतस्थितापातुवः॥ॐ
 गृहीतो ग्रमहा॥ॐ कुरु राजनिहं
 तारं द्रौपद्यानंदकारकं॥मार्गा
 र्णाभयजिह्मं वन्दे हं यवनात्म
 जं॥ॐ ब्रह्मातालधरो हरिश्चमू
 लजीवीणाधरो भारती वंशजो
 शशिभास्करो धनिधरो सिंहास्य
 कोकिन्नरो॥नंदीशधरो मुदङ्ग
 दरितो गीतायते तुम्बुहः शम्भुर्नृ
 त्यकरः स्वभावजनि तो नाटेश्वरः
 पातुवः॥ॐ ज्योतिर्मात्रसदानंद
 निर्मलज्ञानरूपिणो नमः शिवा
 य शांताय ब्रह्मलिङ्गमूर्तये॥ॐ
 ब्रह्मविष्णुमहेशाय॥ॐ अग्रमेय
 हरे॥ॐ यासा पद्मासनस्था॥ॐ म
 यूरकुक्कुट॥ॐ इह देवनमो॥॥
 ० **बोडुस मातुया॥ॐ गौरीपद्मासवी**
 त्यादि॥ॐ यथावा ताप्र॥यजमा
 नस्येति अत्रगध्यादि॥॥मण्ड
 लविसर्जने॥**झापायामंडलसत**
नालं वहाकं तंये॥सप्तप्रणाव
गायत्री॥ॐ मधुवाता॥अद्यादि
 ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्य अग्रयेवेश्वा
 नरदेवेभ्यः मातृपितामहीप्रपि

तामहीभ्यः पितृपितामहप्रपिताम
 हेभ्यः मातामहप्रमातामहहृद्प्र
 मातामहेभ्यः बोडुशमातु नवदेव
 ताभ्यः कालातीतवेलातीततत्त
 र्वनिर्दोषमस्तु॥यस्योद्दिष्टं तस्य
 अक्षय्यमस्तु॥ॐ देवसवितः॥
 अत्रगध्यादि॥॥ॐ सुप्रोक्षतम
 स्तु॥ॐ दीर्घमायुरस्तु॥ॐ शिवा
 आपः सन्तु॥ॐ दीर्घायुनन्दारि
 त्यादि॥**ब्राह्मणापनिष्टलं वद**
तुलुगविये॥ॐ शिवा आपः स
न्तु॥॥विश्वेदेवयातस्त्वनविये॥
 ॐ पुष्पेषु वसंतेलक्ष्मीरित्यादि॥
अक्षतं विये॥ॐ अक्षतं वास्तमे
॥॥विश्वेदेवादिं यवोदकयालं
वतंये॥ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्य अग्र
 येवेश्वानरदेवेभ्यः दत्तमन्नमुद
 कमक्षय्यमस्तु॥ॐ मातृपिताम
 हीप्रपितामहीभ्यः पितृपितामह
 प्रपितामहेभ्यः मातामहप्रमाताम
 हहृद्प्रमातामहेभ्यः बोडुशमातु
 नवदेवताभ्यः दत्तमन्नमुदकमक्ष
 य्यमस्तु॥ॐ यासामुद्दिष्टं तासा
 मन्नमुदकमक्षय्यमस्तु॥अद्यो
 रमातृपितामहीप्रपितामह्यः स

नु॥ ॥ वसोऽयं केतने॥ उं अस्मत्॥ गो
 वंनोवर्द्धतामित्यादि॥ मण्डलसयवे
 दकं हायेकं ते॥ उं दातारो नो विवर्द्धतां
 ॥ मण्डलसचो ड० लंखनमातृ यो डण
 सहाये २॥ उं शान्तिर्भव २॥ थवतं हा
 ये॥ उं पुष्टिर्मम॥ ॥ विश्वे देवादिं अ
 नसंकल्पसवियागुं सतु वयेसिक
 यायवोदकलंखनमातृ यो डण स
 हायेके॥ उं स्वाहा वाचयिष्ये वाच्य
 तां वृद्धि॥ मातृ यो डण या देवनेलं
 खनिपोलहायके॥ उं प्रीयेतां तेभ्यः
 स्वाहा वृद्धि॥ ॥ यो ललितहये॥ उं
 अस्तस्वधा वृद्धि॥ उं नवदेवतेभ्यः
 स्वाहा वाच्यतां वृद्धि॥ ॥ ततो विद्यार्च
 ने॥ उं आकृष्टे॥ उं इदं विष्कः॥ उं न
 मः शम्भवा॥ उं गणानां त्वा॥ उं नमो
 वभ्रुणाय॥ उं जातवेदशेशृणु याव
 सोममरतीयतो निजहातिवेदसन
 परिषततिदुर्गनिविश्चानावेवस
 नदुरितात्यग्निः॥ उं नमस्ते रुद्र॥ उं
 उं अम्बेः अम्बिके॥ उं तीव्राब्धोषा
 न्कुरवते वृषपाणयोश्चारथेभिः
 सहवाजयन्तः॥ अवक्रामन्तः प्रप
 देरमित्रान्क्षिणान्निशत्रुं रनपद्यय
 न्तः॥ उं हिरण्यवर्णा॥ उं महो अणाः
 सरस्वती प्रचेतयतिकेतुना॥ धियो
 विश्वा विराजति॥ उं नमः शङ्खे वच

उं नमोः स्तनीना॥ उं याते रुद्र॥ उं अग्नि
 क्रो॥ पवमानः पाथ जंन्यपुरेहितं॥
 तमीमहे महावयं॥ उं सहस्रशीर्षा॥
 उं श्रीश्चते॥ उं यत्र वाणाः॥ उं विश्वतश्च
 क्षुः॥ ॥ यो डण मातृया॥ उं ग्राम्माले
 खीरन्तरिक्षं माहि ० सीः पृथिव्या स
 भव॥ अयं ० हित्वा स्वधितिस्तेति जा
 नः प्रणिनायमहे ते सो भगाय॥ अत
 स्त्वं देव वनस्पतेशतवल्शो विरोह
 सहस्रवल्शो विवयं ० रुहेम॥ उं
 स्वस्ति नः इन्द्रो ५॥ ॥ धूप० उं धूर
 सि॥ दीप० उं तेजो सि॥ फल० उं याः
 फलिनी॥ अन्न० उं अन्नपतिन॥ ॥ रात्र्य
 उं नमः पर्यायच॥ ॥ यो हल० उं मनोजू
 ति॥ सुप्रतिष्ठावरदाभवन्तु॥ ॥
 धनदुसलकर्मयाये॥ ॥ विश्वे देवा
 दिंदक्षिणादानं॥ उं यथाश्रद्धेति॥ वा
 चनकाये॥ वाचनकाया लंखनयवो
 दकया लंखन अभिषेकविये॥ उं दे
 वस्यत्वा॥ चेत० सिंदूर० सगुणतिके॥ आ
 शीर्वाद॥ सूर्यसाक्षि वाक्येन॥ सकभ
 नं केतने॥ उं सूर्यादिसांगाः सपरिवाराः
 स्वस्थानवासाः भवन्तु॥ उं कपिलादिपं
 चगोमातृका अभिगम्यतां॥ उं कोमारीदे
 यो स्वस्थानवासा भवन्तु॥ उं विश्वे देवा
 वैश्वानरदेवासु सन्निधानमस्तु॥ यो ड
 ण मातृ विसर्जने॥ उं उदयंतमसस्य

रिचः पश्यन्त उन्नरं । देवं देवत्रासु
र्यमगन्मज्जातिहन्तरं ॥ ॥ षोड
शमातुसचोडुं सिद्धुरयजमान
नकार्यैके । देवस्तभागच्छेये
ब्राह्मणदि सकस्यां नित्ये ॥ को
मारी पूजाच्छेये ॥ दुर्वापि स्वागो
ग्रासच्छेये ॥ ॥ शत्याभ्युदयि
कस्यवोदकवृद्धिश्चाद्रुविधिः ॥
षोडशमातुविसर्जनयायगुः ६
पोलजकवृद्धिश्चाद्रुयायगुजुल
सां । तद्रुयायमालसां धुनीक्रु
थवेदनविसर्जनयाय ॥ उं देवा
गातुविदो गातुं वित्वा गातुमिति ।
मनसस्पत इमन्देवयज्ञे ७ स्वा
हावातिधाः ॥ ॥
सगुणधोक्ककार्ये ॥ देवस्तभागच्छे
ये । सकस्यां नित्ये ॥
सं १००६ माघकृष्ण ११ दिजव
रश्रीवीरनाथेन लिखदिदं ॥ ॥

1000

इह दया यन मरु मर्नि न ॥ ५ नायकान वसिक जी मूग वाहन विवि धावे उदावली वि
 नाउ मान समस्त यद्वि या सम लङ्का गङ्गा द्या र्थ दिउ वना रुमः ॥ अमुक नाम लर्म
 लंछ यो जाय ॥ मदन नाउ लर्म लंछ यो जाय ॥ गीवल नाम लर्म लंछः देखाय ॥ गीव
 कुवा वि लर्म लंछः दूजाय ॥ अमुक नाम लर्म लंछः दया र्थ न ॥ वला विना ॥ मिसा या मुनि म ॥

१०२ मम निन मुक यो १०२ रुस निना लंछ कु
 मी नक्षत्र न पिबु दान यान धी पवन नाम य १०२
 धी वद्व १०२ नाय नि क रुकि जिसे न न म १०२
 वाकि एक लंछ नं न न रुह न ॥ १०२ ॥

१०२ नित जना न्मादाय. अद्ये म्मादि देवा काला दी संकीर्त्त. अमुक गोत्रो १०२ मुक शर्मो लंछ मम भिन
 दो मन्त्र कुमार म्पायुरा रो भे अर्थ वल म्पु द्वि वृद्धार्थ कुमार जन्म तो दुहा स्थान स्थिता नां ग्रहा
 रां दुहा दोषो पशान्तर्यं पुन स्थान स्थिता नां मधिक पुन फल प्राप्ति र्थ वात्त ग्रह दशा न्तर्दशा
 जानि तदोषो पशान्तर्यं चि शेष तो रक्षो भूत पिशाचा क्षस वेता ल भेर वना ना विध यो गि नीग
 राय क्षगन्धर्व विद्या धरो म्परो गण देव गण मातृ गणा डा कि नी शाक नी रे वनी गण धि
 न्यो रक्षा र्थ विवि न्या नान्तर्यं गो र्क्षा मातृ का प्रजा प्रवर्कं पठि को देव्याः पूजन म दं करिष्ये इति स
 कल्प्य ॥ ब्राह्मणान् दृष्ट्वा त ॥ ॥ मष्टि प्रजा दाना दिषु अक्षिरुक्ता व्यासेन ॥ स निका वास नि
 लया जन्म दाना मदेवता ॥ नासो यागति मित्रे तु अद्रि र्जन्म नि कीर्त्तिता ॥ अथ मे दिव मे षष्ठे

१०२ नित जना न्मादाय. अद्ये म्मादि देवा काला दी संकीर्त्त. अमुक गोत्रो १०२ मुक शर्मो लंछ मम भिन
 दो मन्त्र कुमार म्पायुरा रो भे अर्थ वल म्पु द्वि वृद्धार्थ कुमार जन्म तो दुहा स्थान स्थिता नां ग्रहा
 रां दुहा दोषो पशान्तर्यं पुन स्थान स्थिता नां मधिक पुन फल प्राप्ति र्थ वात्त ग्रह दशा न्तर्दशा
 जानि तदोषो पशान्तर्यं चि शेष तो रक्षो भूत पिशाचा क्षस वेता ल भेर वना ना विध यो गि नीग
 राय क्षगन्धर्व विद्या धरो म्परो गण देव गण मातृ गणा डा कि नी शाक नी रे वनी गण धि
 न्यो रक्षा र्थ विवि न्या नान्तर्यं गो र्क्षा मातृ का प्रजा प्रवर्कं पठि को देव्याः पूजन म दं करिष्ये इति स
 कल्प्य ॥ ब्राह्मणान् दृष्ट्वा त ॥ ॥ मष्टि प्रजा दाना दिषु अक्षिरुक्ता व्यासेन ॥ स निका वास नि
 लया जन्म दाना मदेवता ॥ नासो यागति मित्रे तु अद्रि र्जन्म नि कीर्त्तिता ॥ अथ मे दिव मे षष्ठे

